अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-42, अंक-16, 1-15 अप्रैल, 2019

कस्तूरबा 150वीं जयंती : पुण्य स्मरण

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

जलियांवाला बाग शताब्दी : शहीदों को शत-शत नमन्!

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 42, अंक : 16, 1-15 अप्रैल, 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. बा और बापू... 4
3. धारावाहिक... 5
4. आवरण कथा... 7
5. युद्ध की विभीषिका... 10
6. भारत में बेरोजगारी... 12
7. सत्तर साल पहले... 13
8. वातायन... 15
9. जिन्हें नाज है... 16
10. हमारे नये प्रकाशन... 17
11. लोक-विमर्श... 18
12. गतिविधियां... 19
13. कविताएं... 20

संपादकीय

लोकतंत्र की चुनौतियां

आम चुनाव की तारीखें घोषित होते ही राजनीतिक गहमा गहमी तेज हो गयी है। पांच वर्ष में एक बार होने वाला आम चुनाव यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र में जनता ही मालिक है। लेकिन जनता के मालिकाना हक को बाधित करने वाली कई शक्तियां भी काम करती रहती हैं। जनता अपना मालिकाना अधिकार कायम करे व उसके दायरे को विस्तार दे, इसमें सबसे बड़ी बाधा वोट बैंक की राजनीति है। वोट बैंक की राजनीति, जनता को विभिन्न संकीर्ण पहचानों में विभाजित कर, मालिक से बंधुआ अंधभक्त बनाने लगती है। इस प्रक्रिया में एक प्रकार की नव सामंती (refeudalisation) प्रवृत्ति का उभार प्रकट होता है। और संकीर्ण पहचानों से बंधे लोग गिरोह में तब्दील होते जाते हैं, मालिक के बजाय अंधभक्त बनते जाते हैं। अंधभक्त बनने की प्रक्रिया का एक दूसरा पहलू यह भी है कि लोकतंत्र के निर्माण के लिए जिन आदर्शों के इर्द गिर्द एक राष्ट्रीय आम सहमति बनी थी, उन आदर्शों से हम दूर होते जाते हैं। तथा उन आदर्शों के आधार पर बनी सर्व सहमति भी टूटती जाती है। इसलिए लोकतंत्र को पुनः उसके वास्तविक स्वरूप की ओर ले जाने की दिशा में पहला कदम यह होगा कि लोकतंत्र के आदर्शों के आधार पर लोक की सर्व सहमति का निर्माण हो। और इस सर्व सहमति के आधार पर लोक की एकता के निर्माण की दिशा में हम आगे बढ़ें।

एक दूसरा बड़ा सवाल यह है कि पांच साल में एक बार नहीं, बल्कि जनता निरंतर कैसे मालिक बनी रहे। प्रतिनिधि आधारित लोकतंत्र में जनता का मालिकाना वर्चस्व निरंतर बना रहे, इसके लिए जरूरी है कि जनता के पास प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार रहे। अभी तो जन-प्रतिनिधि पार्टी के व्हिप, पार्टी के हाई कमान से बंधे रहते हैं। वापस बुलाने का अधिकार होने पर, प्रतिनिधि जनता के प्रति जवाबदेह हो जायेंगे। वास्तविक लोकतंत्र का आधार तो लोक ही होगा। लेकिन बिखरा हुआ और एक दूसरे से असंबंधित लोक नहीं, बल्कि समता, सम्मान और सहयोग के मूल्यों के आधार पर एक-दूसरे से जुड़ा लोक इसका आधार होगा। ऐसा लोक, लोक समुदाय का निर्माण करेगा और उसे सशक्त करेगा। केन्द्रीकृत राज्य एवं अर्थ-व्यवस्था, लोक समुदाय को कमजोर करने का माध्यम बनती है। और प्रकारांतर से लोकतंत्र को भी कमजोर करने का माध्यम बनती है। ग्राम गणराज्य की परिकल्पना, लोक समुदाय को मजबूत करते हुए, लोकतंत्र को मजबूत करने का विचार है। सर्वोदय द्वारा ग्राम स्वराज्य का काम, इसी व्यापक लक्ष्य का एक हिस्सा था। लेकिन केन्द्रीकरण से लड़ने व उसका विकल्प स्थापित करने का काम बहुत आगे नहीं बढ़ सका, इस कारण लोक स्वराज्य की स्थापना का काम कमजोर पड़ गया। आज जब केन्द्रीकरण की शक्तियां अंतर्राष्ट्रीय आयाम ग्रहण कर रही हैं, तब राष्ट्र की संप्रभुता ही कमजोर पड़ने लगी हैं। आज लोकस्वराज्य न केवल लोकतंत्र के लिए जरूरी है, बल्कि राष्ट्र की संप्रभुता को बचाने के लिए भी जरूरी है। सच्चे लोकतंत्र की ओर बढ़ने के लिए भूमंडलीकरण को मजबूत करने वाली शक्तियों के विरुद्ध भी सत्याग्रह एवं रचनात्मक कार्यक्रमों को बढ़ाना होगा। और इसके माध्यम से लोक स्वराज्य की नयी व्यवस्था व नये मूल्यों की स्थापना करनी होगी।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू लोक की एकता के निर्माण का है। जब ब्रिटेन ने भारत को उपनिवेश बनाया था तब भी भारत के औपनिवेशिक शोषण के लिए उन्होंने भारतीय जनता को तरह-तरह से विभाजित करने का षड्यंत्र किया था। आज पुनः भूमंडलीकरण की शक्तियां भारत के अंदर लोक की एकता को खंड-खंड करने के लिए व्यापक षड्यंत्र रच रही है। नफरत एवं झूठ को व्यापक स्तर पर फैलाने का काम चल रहा है। उन्हें बेनकाब करना होगा तथा लोक को विभाजित करने वाली शक्तियों के विरुद्ध व्यापक जन-अभियान चलाना होगा।

बिमल कुमार

अध्यक्ष की कलम से

सन् 1938 मे वर्धा में काका कालेलकर एवं दादा धर्माधिकारी के नेतृत्व मे 'सर्वोदय' का प्रकाशन शुरू हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 1942 में यह बंद हो गया। मार्च 1948 में अखिल भारत सर्व सेवा संघ की स्थापना हुई तो अगस्त 1949 से अ. भा. सर्व सेवा संघ के मुखपत्र के रूप में 'सर्वोदय' का पुनः प्रकाशन शुरू हुआ। आचार्य विनोबा ने संपादक एवं दादा धर्माधिकारी ने कार्यकारी संपादक की जिम्मेवारी स्वीकार की। तब से यह पत्र सर्वोदय विचार की मशाल थामे लगातार चल रहा है। बीच-बीच में तकनीकी कारणों से इसके नाम में परिवर्तन करना पड़ा।

मार्च 2019 में सर्व सेवा संघ के 71 साल पूरे हुए। इन 71 वर्षों में हमने कई महत्त्वपूर्ण पड़ावों को पार किया है लेकिन मंजिल तक पहुंचने के लिए अभी और अहर्निश चलते रहना होगा।

''अभी कहां आराम बदा,
ये मूक निमंत्रण छलना है,
अरे अभी तो मीलों मुझको,
मीलों मुझको चलना है।''

जयप्रकाश नारायण के शब्दों में—

''मंजिलें अनगिनत हैं,
गन्तव्य भी अति दूर है।
रुकना नहीं मुझको कहीं,
अवरुद्ध जितना मार्ग हो।''

'सर्वोदय' के अतिरिक्त सर्व सेवा संघ भूदान यज्ञ, गांव की आवाज, सर्वोदय सामयिकी, नयी तालीम, Sarvodaya, Vigil, People's Action आदि पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा भी अपनी बात लोगों तक पहुंचाता रहा है।

'सर्वोदय जगत' का यह अंक नये स्वरूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। इस अंक से हम दो नये स्तम्भ शुरू कर रहे हैं—1. *'सत्तर साल पहले'* और 2. *'लोक-विमर्श'*। पहले कॉलम में 70 वर्ष पहले 'सर्वोदय' में प्रकाशित कोई ऐतिहासिक लेख प्रकाशित होगा। दूसरे स्तम्भ में किसी सामयिक विषय पर सुधी पाठकों के विचार प्रकाशित किये जायेंगे। इसमें आपकी अधिक-से-अधिक भागीदारी अपेक्षित है।

विचार ही हमारा हथियार है। मैं देश भर में फैले अपने लोकसेवकों एवं सर्वोदय मित्रों से अपील करता हूं कि वे सर्वोदय जगत को अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचायें, ताकि गांधी-विनोबा-जयप्रकाश के विचार तथा सर्वोदय जगत के हलचलों से वे अवगत होते रहें। जो लोकसेवक अधिक ग्राहक बनायेंगे, हम उनके नाम भी पत्रिका में प्रकाशित करते रहेंगे।

हमें देशभर के पाठकों से दो शिकायतें मिलती रहती हैं—अंक नहीं मिलते हैं या काफी विलंब से मिलते हैं। मैं इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूं कि अनेक प्रयत्नों के बावजूद इन शिकायतों का समाधान नहीं हो पाया है। हम पुनः नये सिरे से इन शिकायतों को दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। पाठकों से मेरी अपील है कि रैपर में लगे अपने पते की जांच करें एवं देखें कि इसमें कहीं कोई भूल तो नहीं है। दूसरे, इसमें पिन कोड है या नहीं। संशोधन की जानकारी एक पोस्टकार्ड पर या पत्रिका के ई-मेल पर लिखकर भेजें ताकि इसमें आवश्यक सुधार किया जा सके।

आगामी अंकों को आप कैसा देखना चाहते हैं? इस पर भी आपके बहुमूल्य सुझाव मिलेंगे तो हमें तदनुसार इसे विकसित करने में सुविधा होगी। शुभकामनाओं के साथ!

आदिवासियों के वनाधिकार हनन पर संगोष्ठी का आयोजन

सर्व सेवा संघ आगामी 16 अप्रैल को गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में पूर्वाह्न 11 बजे से एक संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। इस संगोष्ठी में आदिवासियों के वनाधिकार हनन संबंधी सर्वोच्च न्यायालय के 13 फरवरी 2019 के आदेश पर व्यापक विचार विनिमय किया जायेगा। इस संगोष्ठी में समान विचार धर्मी संगठनों व संस्थाओं सहित अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि विगत 13 फरवरी 2019 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय के एक आदेश के अनुसार देश के 21 राज्यों में अनुसूचित जनजाति और पारंपरिक वन निवासी श्रेणियों के लगभग 1939231 लोगों के सिर पर अपनी जमीन से बेदखल होने का संकट मंडरा रहा है। इस संबंध में वन अधिकार अधिनियम 2006 के प्रावधानों के तहत वनवासियों की तरफ से दिये गये आवेदन को न्यायालय ने खारिज कर दिया है और संबंधित राज्य सरकारों को हलफनामा दायर करने का निर्देश देते हुए कहा है कि 27 जुलाई से पहले उक्त आदेश को लागू कराया जाय।

सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि वन भूमि पर वर्तमान दखल अतिक्रमण है। इस अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई के बारे में राज्य सरकारें हलफनामा दाखिल करें और अतिक्रमणकारियों से वन भूमि को मुक्त करायें तथा 27 जुलाई को अगली सुनवाई पर की गयी कार्रवाई से अदालत को अवगत करायें।

अदालत के उक्त आदेश के बाद पैदा हुई परिस्थितियों पर व्यापक विचार विमर्श करने और संघर्ष की योजना बनाने के लिए आयोजित इस संगोष्ठी में आपकी भागीदारी के लिए सर्व सेवा संघ अपील करता है।

(अरविन्द अंजुम) समिति सदस्य | **(घनश्याम)** जोहार | **(अविनाश काकड़े)** समिति सदस्य | **(आदित्य पटनायक)** समिति संयोजक | **(महादेव विद्रोही)** अध्यक्ष, ससेसं

बा और बापू : एक आदर्श सहजीवन

❑ जयवंत मठकर

इस वर्ष 11 अप्रैल को कस्तूरबा के जन्म के 150 वर्ष पूरे हो जायेंगे। बीते वर्ष 2018 में गांधी 150वीं जयंती अभियान की शुरुआत कस्तूरबा जयंती से ही हुई। आमतौर पर सर्वोदय और गांधी परिवार के अलावा कस्तूरबा की जयंती या पुण्यतिथि कभी व्यापक सार्वजनिक स्तर पर नहीं मनायी गयी। वे गांधीजी की पत्नी हैं, बस इतनी ही उनकी पहचान थी। जबकि वास्तविकता यह है कि कस्तूरबा गांधीजी के जीवन का आधारस्तंभ रही हैं। राष्ट्रीय आंदोलन में सत्य, अहिंसा, रचनात्मक कार्य तथा सत्याग्रह के मोर्चों पर बा के समर्पण भरे योगदान से देश में जागरण हुआ। सादगीपूर्ण जीवन, असीम धैर्य और सेवा उनकी विशेषता थी। जिस तरह विनोबा की सेवा, समर्पण, नैतिकता और सत्याग्रही गुणों को देखकर गांधीजी ने उन्हें प्रथम सत्याग्रही घोषित किया था, वैसे ही महिला सत्याग्रह में बा प्रथम सत्याग्रही थी।

दक्षिण अफ्रीका के सर्वोच्च न्यायालय ने एक निर्णय दिया था कि दक्षिण अफ्रीका में रह रहे लोगों में जिनकी शादी ईसाई विधि-विधान से नहीं हुई होगी, उन्हें कानूनी मान्यता नहीं मिलेगी। मतलब कि वहाँ हिन्दू, मुस्लिम, पारसी आदि धर्मावलंबियों के विवाह कानून रद्द माने जायेंगे। उनकी संतान अनौरस मानी जायेगी। वे धन, सम्पत्ति के वारिस नहीं रहेंगे। गांधीजी के मुंह से यह समाचार सुनने के बाद कस्तूरबा को बड़ा धक्का पहुंचा। गांधीजी ने कस्तूरबा को प्रेरित किया कि जिस तरह पुरुष सत्याग्रह में सहभागिता कर रहे हैं, उसी तरह महिलाओं को भी इस अन्यायपूर्ण कानून के विरोध में सत्याग्रह करना चाहिए। पहले तो कस्तूरबा को लगा कि वह मजाक कर रहे होंगे। लेकिन जब मामले की गंभीरता को समझ लिया तो उन्होंने सत्याग्रह में शरीक होने का निर्णय लिया।

दक्षिण अफ्रीका में 16 महिलाओं का पहला सत्याग्रह उनके ही नेतृत्व में हुआ। इन सत्याग्रही महिलाओं को सेंट पीटरमारित्जबर्ग जेल भेजा गया। उन्हें वहां जेल के कठोर नियमों का पालन करना पड़ा। कस्तूरबा ने जेल में भी अपनी साथी महिलाओं का पूरा ख्याल रखा। परिवार की याद न आये, इसलिए उन्हें कार्य निमग्न रखती थी। जेल में निकृष्ट खाना मिलने पर जेल के अफसरों से शिकायत करती थीं।

22 दिसंबर को महिला सत्याग्रहियों की सजा समाप्त हुई। उनके स्वागत के लिए जेल के बाहर काफी भीड़ इकट्ठा हुई। स्वयं गांधीजी भी महिला सत्याग्रहियों के स्वागत के लिए पहुंचे थे। इस सत्याग्रह से सत्याग्रहियों में उत्साह का संचार तो हुआ लेकिन कस्तूरबा का स्वास्थ्य खराब हुआ। इस सत्याग्रह के बाद ही उनका नाम प्रथम महिला सत्याग्रही के तौर पर जाना गया। जिस प्रकार महाराष्ट्र में ज्योति बा फुले और सावित्री बाई फुले का नाम पीड़ित स्त्रियों के उद्धारक के तौर पर लिया जाता है, वैसे ही कस्तूरबा का नाम स्वतंत्रता आंदोलन में सर्वधर्म समभाव, सत्याग्रह, सेवाभाव तथा विभिन्न रचनात्मक कार्यों के आविष्कार के लिए लिया जाता है।

वैश्वीकरण के बाद से सभी क्षेत्रों में रोजगार की समस्या ने सिर उठाया है। रोजी-रोटी की समस्या पुरुषों के अलावा गरीब, असंगठित, दलित तथा आदिवासी महिलाओं के लिए भी उतनी ही बड़ी समस्या है। समाज में हिंसा, उन्माद, धर्मांधता, पुरुषसत्ता से उत्पन्न मानसिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, व्यसनाधीनता तथा राजनीति के अपराधीकरण आदि के दुष्परिणामों का सामना प्रथमतः महिलाओं को ही करना पड़ता है। इसका निराकरण सर्वधर्म समभाव, सत्याग्रह, रचनात्मक कार्य और स्वदेशी के जरिये ही संभव है। बा ने बापू के साथ आजीवन यही कार्य किया। बापू के सत्य के प्रयोगों का पहला परिणाम भी बा को ही झेलना पड़ता था। बा और बापू का संयुक्त सहजीवन मंगलमय और कल्याणकारी था। पुत्र हरिलाल के संदर्भ में भी पुत्रप्रेम को छोड़कर उन्होंने बापू के तत्त्व और कार्य को हमेशा प्रधानता दी। यह एक प्रकार की जीवन दीप्ति थी। जीवन में ऐसी वृत्ति अपनाकर ही वे बा के एकाक्षरी नाम से सभी की मां बन सकी। साने गुरुजी ने बा और बापू को नवभारत का माता-पिता कहा था। कस्तूरबा का जीवन पवित्र और सुगंधित था। जेल में उनकी मृत्यु एक पवित्र बलिदान था। गांधीजी के पुत्रवत शिष्य और सचिव महादेव भाई के साथ उनकी समाधि एक तीर्थक्षेत्र है। बा और बापू का जीवन राष्ट्र की अमर थाती है। ❑

सर्वोदय जगत के संवाददाता बनें

जिलों, प्रदेशों और केन्द्रीय स्तर पर होने वाली सांगठनिक गतिविधियां पाक्षिक सर्वोदय जगत की ताकत है। हम जहां भी हों, जो भी कार्यक्रम आयोजित कर रहे हों, जिन भी कार्यक्रमों में भागीदारी कर रहे हों और जिन भी मुद्दों पर संघर्षरत हों, उन सभी गतिविधियों में शामिल होना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है उनका खबरों के रूप में प्रकाशन। सर्वोदय जगत आपका अपना पत्र है। आपकी अभिव्यक्तियों और आपकी गतिविधियों को जाहिर करने, उन्हें प्रकाशित व प्रसारित करने का अपना मंच है। आप सभी से हमारा आग्रह है कि अपने अपने जिलों व प्रदेशों की ऐसी तमाम गतिविधियों की खबर कार्यक्रम के तुरंत बाद अवश्य लिखें और उन्हें सर्वोदय जगत के संपादकीय पते पर प्रेषित करें। हम सभी अपने पत्र के संवाददाता हो सकते हैं। हम सभी अपने पत्र के विश्वसनीय समाचार सूत्र हो सके हैं। हम सभी इतने बड़े संगठन का हिस्सा हैं। अपनी लेखन-अभिरुचियों को जगायें और सर्वोदय जगत के लिए समाचार लिखें। हमारी वे तमाम गतिविधियां और भागीदारियां जो समाज के अंतिम व्यक्ति के अधिकारों और हमारे अपने नागरिकता बोध से जुड़ती हैं, वे सर्वोदय जगत के स्वरूप में जान डाल सकती है। इसलिए कलम और कागज उठायें और ऐसी तमाम गतिविधियों से हमें अवगत करायें। आपकी लेखकीय क्षमता थोड़ी कम भी हो, तो संकोच न करें, उसमें आवश्यक सुधार के लिए हमारे पास योग्य संपादकों की टीम है। वह आपके लिखे को प्रकाशन योग्य बनाकर खुशी महसूस करेगी। **–सं.**

धारावाहिक

'बा'
भारत वापसी

❑ गिरिराज किशोर

गांधीजी को लेकर एक बड़ा और चर्चित उपन्यास प्रस्तुत कर चुके श्री गिरिराज किशोर ने अब बा पर कलम उठायी है। बा पर कुछ भी लिखना बहुत कठिन था। नहीं के बराबर जानकारियां। 'पहला गिरमिटिया' की सामग्री जुटाने में उन्हें कोई दो हजार पुस्तकों से मदद मिली थी। और 'बा' उपन्यास लिखते समय मुश्किल से दो पुस्तकें सामने थीं। वे उन सब लोगों से मिले, जिन्हें कस्तूरबा के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी थी और उन जगहों पर गये, जहां बा ने थोड़ा या बहुत समय बिताया था। इस तरह बनी यह कथा, यह इतिहास बा के अलावा खुद बापू के दो और रूपों को भी सामने रखता है–पति और पिता का रूप। प्रस्तुत है 'बा' का एक अंश, जो बा-बापू : 150 के अवसर पर क्रमशः प्रकाशित हो रहा है। –सं.

एक दिन श्रीमती मशरूवाला ने घर में बताया कि गांधीजी उनके घर आ रहे हैं। कस्तूरबा तो पहले आ चुकी थी। इस बार गांधीजी स्वयं आ रहे थे। घर में उत्साह का वातावरण था। 1917 की बात है जब बापू और बा दोनों साथ आए थे। उन्हें पता चला कि वे अपने बेटे का विवाह उनकी बेटियों में से किसी एक से करना चाहते हैं। गांधीजी ने मणिलाल की फोटो दिखाते हुए कहा, यह

मेरे बेटे मणिलाल की फोटो है। साथ ही उन्होंने यह भी बता दिया कि शादी के बाद लड़की को गरीबी में रहने की शपथ लेनी पड़ेगी। उसको दक्षिण अफ्रीका जाकर फीनिक्स आश्रम में रहना होगा। तीन-चार साल में एक बार भारत का चक्कर लगेगा। उनकी बड़ी बेटी सुशीला दरवाजे के पीछे खड़ी सुन रही थी। बा ने देख लिया था। बापू ने मणिलाल की फोटो उनके पास छोड़ दी। जब वे लोग अकोला से चले तो बा मन बना चुकी थी कि किस लड़की से मणिलाल का विवाह करेंगी।

उसके बाद समय तेजी से गुजरा और दो महीने बाद ही मणिलाल का विवाह, बड़ी बेटी सुशीला से बड़े सामान्य ढंग से संपन्न हो गया। बापू ने वर-वधू को विशेष परिस्थितियों में दूसरे दर्जे में यात्रा करने की अनुमति दे दी थी। कस्तूरबा वर की बा के रूप में पहली बार उस गरिमा का अनुभव कर रही थी जो वह हरिलाल और गुलाब के विवाह में नहीं कर पाई थीं। बा ने मन में तय कर लिया था कि लकीर का फकीर बने रहने से कोई लाभ नहीं। परंपरा के विरुद्ध वर-वधू दोनों सबके सामने बराबर बैठे थे। कोई किसी से नहीं बोल रहा था। कस्तूरबा को कहना पड़ा, 'तुम दोनों बुत बने क्यों बैठे हो? तुम्हारे पास बात करने के लिए क्या कुछ नहीं है?' सुशीला जिस पृष्ठभूमि से आयी थी उसमें पति-पत्नी इस तरह सबके सामने न बैठते थे, न बतियाते थे। सास का यह एक वाक्य सुनकर वधू की सारी झिझक समाप्त हो गयी।

बा बहुत खुश थी कि दक्षिण अफ्रीका से मणिलाल और सुशीला एक साल की बेटी सीता के साथ भारत आ रहे थे। बा इस बात को लेकर बहुत उत्साहित भी थी कि बहू से मन भरकर बातें करेगी। नवागत पोती को खिलाएगी। बा यह भी जानने को उत्सुक थी कि उसे फीनिक्स आश्रम का जीवन कैसा लगा। आश्रमवासी कैसे हैं। लेकिन खुलकर बात करने का समय नहीं मिला। बापू ने उन्हीं दिनों दांडी पदयात्रा की घोषणा कर दी थी। अन्य सब आश्रमवासियों की तरह बा भी तैयारी में लग गयी थीं।

बा रोज सवेरे चार बजे उठती थीं। 12 मार्च, 1930 को काफी पहले उठ गई थीं। बापू को अपने साथियों के साथ दो सौ चालीस मील दांडी तक पदयात्रा करनी थी। नमक पर टैक्स लगाए जाने वाले कानून को, समुद्र किनारे नमक बनाकर तोड़ना था। हालांकि बापू की इस यात्रा का अंदर और बाहर काफी विरोध था। लेकिन यह यात्रा असहयोग आंदोलन के इतिहास में मील का पत्थर ही नहीं थी, बल्कि इस यात्रा से अंग्रेज हुकूमत हिल गयी थी।

बा सवेरे जल्दी उठकर नहाई, नए कपड़े पहने। कई काम करना बाकी था। वह जान रही थी कि देसी-विदेशी पत्रकारों और फोटोग्राफरों की भीड़ आश्रम के बाहर जमा होगी। वे सब पदयात्रा के लिए रात-भर कैम्प लगाकर खुले में रहे थे। बा ने नीम अंधेरे, पूरे आश्रम का चक्कर लगाकर संवासियों को प्रार्थना के लिए जगाया। यात्रियों के खाने के प्रबंध का जायजा लिया। बा के मन में बार-बार यह खयाल आता था कि क्या एक चुटकी नमक बनाने से सरकार पर असर पड़ेगा? फिर सोचती थी, बापू इस तरह के मामलों में सोच-समझकर कदम उठाते हैं। चुटकी भर नमक बनाने के लिए दो सौ चालीस मील की यात्रा करना और नमक कानून तोड़ना अवश्य लोगों के मन पर गहरा

असर डालेगा। वह यह सोचकर उत्साहित और आशान्वित हो जाती थी। लेकिन यह सोचकर काँप भी जाती थी कि इस पदयात्रा में गांधी परिवार की तीन पीढ़ियां भाग ले रही हैं। बापू, मणिलाल और हरिलाल का सबसे बड़ा बेटा कांति। कांति को बा ने पाला था और बचपन से लेकर आज तक प्यार किया था। बा की आंखें भर आईं, काश आज हरि भी पदयात्रा में सम्मिलित होता। दक्षिण अफ्रीका में असहयोग आंदोलन को आगे ले जाने वाला हरि, बापू की आंखों की किरण बन गया था। जाने बाप-बेटे कैसे बंट गये। पता नहीं सरकार, यात्रियों के साथ कैसे व्यवहार करे।

बापू ने सहयात्रियों को संबोधित करते हुए कहा, 'अंग्रेज सरकार हमारे खिलाफ बंदूकें इस्तेमाल कर सकती है पर हमें शांत रहना है। डरकर आत्म समर्पण करने वाले मेरे साथ न आयें।' कस्तूरबा ने सुशीला के कंधे पर हाथ रखकर ढांढ़स बंधाया। बा इसी प्रकार सब पदयात्रियों के संबंधियों की हिम्मत बंधाती घूम रही थी। जब पहली बार बापू के साथ दक्षिण अफ्रीका गयी थीं और रास्ते में समुद्री तूफान आ गया था तो उन्होंने देखा था, बापू जहाज के एक-एक यात्री के पास जाकर उनकी हिम्मत बढ़ा रहे थे। वह स्मृति बा को प्रेरणा दे रही थी।

दिन निकल रहा था। सूरज आकाश को अपने अधिकार में लेने के लिए सधे कदमों से आगे बढ़ रहा था। प्रार्थना समाप्त हो गयी थी। पहले दिन बापू प्रार्थना सभा में घोषणा कर चुके थे कि साबरमती तभी लौटेंगे जब आजादी पा लेंगे। इस प्रतिज्ञा ने सबको चौंका दिया था। आखिर वह क्षण आ गया, पदयात्री धवल खादी के वस्त्रों में, स्वजनों से विदा लेने के लिए आगे बढ़े। सबके मस्तक पर आश्रम की महिलाओं द्वारा लगाया गोरोचन का तिलक झिलमिला उठा। बा का लगाया तिलक भी अन्य महिलाओं के तिलक के साथ बापू के ललाट पर दैदीप्यमान था। पत्रकार और फोटोग्राफर बापू के पीछे दौड़ रहे थे। बापू की चलने की गति तेज थी।

बापू से एक विदेशी पत्रकार ने पूछा, 'आप समझते हैं, एक चुटकी नमक बनाने से आपके देश को आजादी मिल जायेगी?'

'हम आजाद हैं, आजादी एक संकल्प है, स्वयं करना पड़ता है।' कहकर बापू हंस दिये।

बा का निडर उद्घोष पदयात्रियों के कानों में गूंज रहा था, 'हमारे मर्द बलिदान के लिए निकले हैं, वे जुझारू हैं, हम उनकी पत्नियां हैं।' बा सीना ताने सीधी खड़ी थी, दुबली पतली और ओजस्वी। पदयात्रियों को संबोधित करते हुए उनके चेहरे पर अद्भुत तेज था। बापू सबसे आगे बांस की लाठी और मजबूत चप्पल पहने चलने के लिए तैयार खड़े थे। बा उनके पास गईं। उनकी आंखों में एक बार गहराई से देखा। वहां शब्दों की कोई गुंजाइश नहीं थी। हाथ में पीतल की थाली दी, उसमें घी सना सिन्दूर था। पूरी एकाग्रता और कोमलता के साथ, स्मृति चिन्ह की तरह, उन्होंने बापू को तिलक लगाया। उसके बाद पंक्तिबद्ध, जो पदयात्री सामने आता गया, उसी कल्याण भावना से तिलक लगाती गयीं। जिसके माथे पर बा की उंगली से टीका लग जाता, वह गर्व और नये आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ जाता था। उनके तिलकांकन के पीछे निहित संदेश था, 'पदयात्री तुम जाओ और सफलता के साथ सुरक्षित लौटो, हम स्वागत में खड़े मिलेंगे।'

बा के चेहरे पर से दुखों, पीड़ाओं की सब रेखाएं उस समय मिट गयी थीं। उनकी जगह एक वीरांगना की-सी दृढ़ता ने ले ली थी। उस समय वे मां स्वरूपा थीं। बापू उस समय अहिंसक युद्ध के नायक थे और वह आश्रम में संरक्षिका की भूमिका में थी।

पदयात्रा धीरे-धीरे विदा हो गयी। जहां तक नजर गयी, वहां तक बचे हुए आश्रमवासी, रेखा में परिवर्तित होती जा रही पदयात्रा को तब तक निहारते रहे जब तक वह ओझल नहीं हो गयी। सबके चले जाने के बाद बा वहीं बैठी बापू और यात्रा के उस शून्य को निहारती रहीं जो अनायास पीछे छूट गया था।

साबरमती आश्रम में पदयात्रियों के समाचार थम-थमकर आते थे। कितने सच थे, कितने झूठ, कहना मुश्किल था। पर कस्तूरबा और संवासी उन समाचारों को उत्सुकता से सुनते थे। मन में एक डबका रहता था, उन शांत पदयात्रियों पर पता नहीं गोरी पुलिस कब टूट पड़े। लेकिन आश्चर्य इस बात पर था कि जो पुलिस छोटे-छोटे विरोधों पर टूट पड़ती थी, वह एकदम खामोश थी। पूरा देश आंदोलित था फिर सरकार को किस बात का इंतजार था। शायद दिल्ली का आदेश था, देखो और प्रतीक्षा करो। आंदोलन अपने आप शिथिल होकर समाप्त हो जायेगा। बापू बराबर महादेव भाई के द्वारा अपनी यात्रा की रपट समाचार-पत्रों को भिजवा रहे थे। आश्रमवासियों को भी अवगत रख रहे थे। *...क्रमशः अगले अंक में*

प्रकाशकीय घोषणा-पत्र

(फार्म-4, नियम-8 के अनुसार)

प्रकाशन स्थल	: सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी
प्रकाशन अवधि	: पाक्षिक
मुद्रक का नाम	: श्री आनन्द जैन
नागरिकता	: भारतीय
पता	: महावीर प्रेस भेलूपुर, वाराणसी
प्रकाशक का नाम	: शेख हुसैन
नागरिकता	: भारतीय
पता	: सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी
संपादक का नाम	: बिमल कुमार
नागरिकता	: भारतीय
मालिक का नाम	: सर्व सेवा संघ
पता	: राजघाट, वाराणसी

मैं शेख हुसैन एतदद्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। **–शेख हुसैन**

प्रकाशक

जलियांवाला बाग में जनरल डायर

लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पायी

13 अप्रैल 1919 को सुबह 9.30 बजे के लगभग जनरल डायर ने एक अंगरक्षक टुकड़ी के साथ शहर में प्रवेश किया और एक घोषणा की. यह घोषणा, लॉर्ड हंटर के सामने जनरल डायर की गवाही के अनुसार, तीन भागों में थी. इसका अंतिम भाग ही इस अवसर पर महत्त्व का है. वह इस प्रकार है-

'शहर में या शहर के किसी भी भाग में या शहर के बाहर किसी भी प्रकार का कोई भी जुलूस किसी भी समय निकालने की मुमानियत है. इस प्रकार के किसी भी जुलूस, या चार व्यक्तियों के किसी भी जमघट को गैर-कानूनी माना जायेगा और आवश्यक होने पर शस्त्र-बल से तितरबितर कर दिया जायेगा.'

जनरल डायर से बारीकी से पूछताछ की गयी कि 'आवश्यक होने पर' की शर्त और 'जुलूस' के साथ-साथ प्रयुक्त हुए शब्द 'जमघट' का क्या अर्थ है. 'आवश्यक होने पर' का अर्थ यही हो सकता है कि 'यदि यह जमघट और किसी प्रकार तितर-बितर न हो तो', और 'जमघट' का अर्थ हो सकता है किसी 'सार्वजनिक स्थल पर जमघट'; अन्यथा घरों में भी चार से अधिक व्यक्तियों का जमा हो जाना घोषणा के अनुसार गैरकानूनी जमघट हो जायेगा.

जनरल डायर ज्यों-ज्यों शहर में आगे बढ़ते गये, थोड़ी-थोड़ी देर बाद एक दुभाषिया इस घोषणा को पंजाबी और उर्दू में पढ़ता गया. शहर से गुजरने में जनरल डायर को उन्हीं के कथनानुसार '2-3 घंटे' लगे. लोगों को जमा करने के लिए डोंडी पीटी जाती थी. को एक नक्शा दिया गया, जिसमें उन स्थानों पर निशान लगे थे जहां घोषणा पढ़ी गयी थी; और उन्होंने स्वीकार किया कि शहर के कई भागों में वह नहीं पढ़ी गयी थी. हमने उस नक्शे का, जिस पर रास्ते चिह्नित हैं, अध्ययन किया है. शहर का आधे से अधिक भाग, और वह भी सबसे अधिक आबादी वाला भाग, जनरल ने अछूता ही छोड़ दिया था. इस बात के प्रचुर प्रमाण उपलब्ध हैं कि बहुत कम नागरिकों को इस घोषणा के बारे में मालूम था. इसके अलावा, जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, 13 अप्रैल बैसाखी का दिन था. यह हिंदुओं का नववर्ष का दिन है और आस-पास के गांवों से लोग बहुत बड़ी संख्या में शहर में आ रहे थे, जिन्हें घोषणा के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था. सरकारी गवाहों ने इस बात को स्वीकार किया है कि इस प्रकार के लोग आये और उन्होंने घोषणा नहीं सुनी होगी.

जिस समय यह घोषणा हो रही थी, उसी समय या कुछ आगे-पीछे एक लड़का अमृतसर की गलियों में एक कनस्तर बजा कर ऐलान कर रहा था कि साढ़े चार बजे जलियांवाला बाग में एक सभा होगी और लाला कन्हैयालाल इसका सभापतित्व करेंगे. इस बारे में शंका हो सकती है कि लड़के ने यह ऐलान ठीक-ठीक किस समय किया, लेकिन हमारे सामने जो साक्ष्य हैं, उनके अनुसार यह ऐलान जनरल डायर की घोषणा से कुछ समय पहले किया गया था. लाला कन्हैयालाल कहते हैं-

'मैंने सुना कि कुछ लोगों ने 13 अप्रैल को यह ऐलान किया कि मैं जलियांवाला बाग में एक भाषण दूंगा. इससे लोगों का यह खयाल बना कि मैं तत्कालीन स्थिति के बारे में उन्हें कोई ठीक सलाह दूंगा.'

(बयान 29, पृष्ठ 73)

करीब 12 बजकर 45 मिनट पर जनरल डायर को सूचना दी गयी कि उसी दिन अपराह्न में 4 बजकर 30 मिनट पर जलियांवाला बाग में एक बड़ी सभा होनेवाली है. जनरल डायर स्वीकार करते हैं कि सभा को रोकने के लिए उन्होंने कोई कदम नहीं उठाया. 'मैं चाहता हूं, आप यह बतायें', लॉर्ड हंटर ने कहा, 'आपने जलियांवाला बाग में भीड़ जमा होने से रोकने के लिए कोई कदम क्यों नहीं उठाया?' जनरल ने उत्तर दिया- मैं जितनी जल्दी हो सकता था, वहां गया. मुझे अपने सैनिकों को संगठित करना था, स्थिति पर विचार करना था... मैंने सोचा, मैंने उन्हें सावधान कर दिया था कि वे जमा न हों और यह काफी था.

लॉर्ड हंटर ने प्रश्न किया- 'क्या सैनिक दस्तों की व्यवस्था के लिए 12.40 से 4 बजे तक के समय की आवश्यकता हुई?'

जनरल डायर ने उत्तर दिया-'दरअसल मुझे विश्वास नहीं था कि मैंने जो कुछ उस दिन सुबह किया था, उसके बाद वे सचमुच जमा होंगे. मुझे यह खयाल नहीं आया कि कुछ सैनिक और भेजकर लोगों को आगाह करूं कि वे सभा में न जायें.'

चार बजे उन्हें निश्चित सूचना मिली कि सभा सचमुच शुरू हो गयी है. जल्दी ही वे

एक घटना जिसने बदल दी इतिहास की धारा

भारतीय इतिहासकार और राजनेता ईएमएस नंबूदरीपाद ने लिखा है कि पंजाब में एक ऐसी घटना हुई, जिसने इतिहास की धारा ही मोड़ दी. इसे हम जलियांवाला बाग कांड के नाम से जानते हैं. अमृतसर में 13 अप्रैल को घटित हुई पाशविक दमन की इस घटना ने देश में एक जनविद्रोह को जन्म दे दिया. जलियांवाला बाग में उस समय 6000 लोग थे. जनरल डायर ने न तो चेतावनी दी और न ही यह कहा कि इन लोगों का एकत्र होना प्रशासन ने गैरकानूनी माना है. लोग आते गए और आखिर में अचानक बाग के पांचों रास्ते बंद कर लोगों से भरे बाग में गोलियां चला दी गईं. इस नरसंहार में एक हजार लोग मारे गए, लेकिन अंग्रेज प्रशासन ने इसे महज 288 ही माना. जनरल डायर को पूरी दुनिया के सभ्य लोगों ने अमृतसर का कसाई कहा और उसकी निंदा की. लेकिन तब भी ब्रिटिश उसकी तारीफें करते रहे।

नाकेबंदी के लिए सैनिक लेकर शहर की ओर चल पड़े. इनमें 25 राइफलधारी गोरखे और 25 सिख भी शामिल थे. उनके साथ 40 गोरखे और थे, जिनके पास खुखरियां थीं और वे अपने साथ दो बख्तरबंद गाड़ियां भी लेते गये. वे साधारण 'टहलने की चाल' चलते हुए गये. जब लॉर्ड हंटर ने प्रश्न किया कि उन्होंने यह क्यों आवश्यक नहीं समझा कि वहां पहुंचने में कुछ अधिक शीघ्रता की जाये, तो डायर ने उत्तर दिया- 'नहीं जनाब, गरमी बहुत थी, हम साधारण कदम-चाल से ही चले.'

जलियांवाला बाग क्या है? 'बाग' शब्द उस जगह को देखते हुए दरअसल ठीक नाम नहीं है. 'जलियां' उसके मूल मालिकों का जाति-नाम है; 'वाला' सम्बंधबोधक शब्द है. 'बाग' जिसका अर्थ बगीचा है, दरअसल मकानों से घिरा एक परती ज़मीन का टुकड़ा है. उस समय वह ज़मीन एक निजी सम्पत्ति थी और उसके कई मालिक थे. जैसा कि संलग्न नक्शे से साफ़ है, यह स्थान एक असमान आयत है. इस आयत में तीन पेड़ हैं, एक टूटी-फूटी गुम्बददार समाधि है और एक कुआं है. अंदर जाने का मुख्य रास्ता एक तंग गली से है, सौभाग्यवश जिसमें बख्तरबंद गाड़ियां नहीं जा सकती थीं. अंदर जाने के लिए और कोई नियमित रास्ते नहीं थे, किंतु 4-5 स्थानों पर संकरे रास्ते थे, जिनमें से होकर बाहर निकला जा सकता था. इस अहाते के प्रवेशस्थल पर ज़मीन कुछ ऊंची है और सैनिकों को तैनात करने और सामने की भीड़ पर गोली चलाने के लिए बहुत उपयुक्त है. इसलिए जब जनरल डायर ने 90 सैनिकों के साथ बाग में प्रवेश किया, उस समय भीड़ के लिए बाहर निकल सकने का कोई आसान रास्ता नहीं था.

जो गवाही हमारे सामने है, उसके अनुसार जनरल डायर के पहुंचने से पहले सभा में, जिसमें लगभग 20,000 लोग थे, हंसराज व्याख्यान दे रहे थे. वे और थोड़े से दूसरे लोग एक कामचलाऊ मंच पर खड़े थे. सैनिकों के पहुंचने से पहले से एक वायुयान सभास्थल के ऊपर मंडरा रहा था. हंसराज ने लोगों से कहा कि वे भयभीत न हों. श्रोताओं में बहुत-से लड़के और बच्चे थे, और कुछ लोग शिशुओं को गोद में लेकर आये थे. लोगों के पास लाठियां आदि नहीं थीं. खुफिया पुलिस के भी कुछ लोग सभा में मौजूद थे. उनमें से दो व्यक्तियों को हंसराज से बातें करते देखा गया. आयताकार स्थान के किनारे ऊंची भूमि पर जनरल डायर ने 25 सैनिक दाई ओर और 25 सैनिक बाई ओर तैनात कर दिये. इसके बाद जो-कुछ हुआ, उसे उन्हीं के शब्दों में देना ठीक है-

जब आप बाग में पहुंचे तो आपने क्या किया?

मैंने गोली चलायी.

एकदम?

तत्काल! मैंने इस विषय में विचार कर लिया था और मेरा खयाल है कि यह निश्चय करने में मुझे 30 सेकेण्ड से अधिक नहीं लगे कि मेरा क्या कर्त्तव्य है.

जहां तक भीड़ का सम्बंध है, वह क्या कर रही थी?

बस, वे लोग सभा कर रहे थे, बीच में एक ऊंची-सी चीज़ पर एक व्यक्ति खड़ा था. उसके हाथ हिल रहे थे. स्पष्ट ही वह भाषण दे रहा था. जहां तक मैं अनुमान कर पाया, वह आयत के ठीक बीच में था, कहना चाहिए कि जहां मेरे सैनिक तैनात थे, वहां से लगभग 50 या 60 गज दूर.

जनरल ने यह स्वीकार किया था कि ऐसे बहुत से लोग हो सकते थे, जिन्होंने घोषणा के बारे में कुछ न सुना हो. अतः लॉर्ड हंटर ने प्रश्न किया -

यह सम्भावना स्वीकार करने पर कि भीड़ में ऐसे लोग हो सकते थे जिन्हें घोषणा की जानकारी नहीं थी, क्या आपको यह नहीं सूझा कि गोली चलाने की आज्ञा देने से पहले भीड़ को तितरबितर हो जाने के लिए कहना उचित होगा?

नहीं, उस समय मुझे यह नहीं सूझा. मुझे केवल यह महसूस हुआ कि मेरी आज्ञा का उल्लंघन हुआ है, फौजी कानून की अवहेलना हुई है और मेरा कर्त्तव्य है कि मैं तुरंत राइफलों द्वारा गोली चलाऊं.

जब आपने भीड़ को तितर-बितर किया, क्या उससे पूर्व भीड़ ने किसी भी प्रकार की कोई कार्रवाई की थी?

नहीं जनाब, वे भाग गये थे- उनमें से कुछ लोग.

क्या वे भागने लगे?

हां, जब मैंने गोलियां चलाना शुरू किया तो मध्य भाग में जो बड़ी भीड़ थी वह दाहिनी ओर को भागने लगी.

फौजी कानून का ऐलान तो किया नहीं गया था. इसलिए आपने जब यह कदम उठाया, और जो एक अत्यंत गम्भीर कदम था, तो क्या उससे पहले आपने यह उचित नहीं समझा कि इस सम्बंध में डिप्टी कमिश्नर से परामर्श ले लें, जो शहर में अमन बनाये रखने के लिए ज़िम्मेदार असैनिक अधिकारी थे?

इस समय कोई डिप्टी कमिश्नर नहीं था, जिससे मैं परामर्श करता. मैंने यह ठीक नहीं समझा कि इससे आगे और किसी से

तहकीकात कमेटी 1919

जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए कांग्रेस ने भी एक समिति की नियुक्ति की थी। इस समिति को तहकीकात समिति कहा गया गया। इसके अध्यक्ष मदन मोहन मालवीय थे, इसके अन्य सदस्य महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरु, अब्बास तैयबजी, सीआर दास एवं पुपुल जयकर थे।

इस समिति ने अपनी रिपोर्ट में अधिकारियों के इस बर्बर कार्य के लिए उन्हें निंदा का पात्र बनाया। सरकार से दोषी लोगों के खिलाफ कार्यवाही करने और मृतकों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने की मांग की गयी। लेकिन सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। फलस्वरुप गांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाने का निर्णय लिया और इस प्रकार स्वतंत्रता संघर्ष के तृतीय चरण की शुरुआत हुई और स्वतंत्रता के आंदोलन में गांधीजी का आगमन हुआ।

सलाह लूं. मुझे एकदम यह निर्णय करना पड़ा कि मुझे क्या करना चाहिए. मैं सैनिक दृष्टि से इस निर्णय पर पहुंचा कि मुझे तुरंत गोली चलानी चाहिए और मेरे लिए यह न करना अपने कर्तव्य से डिगना होगा.

क्या गोली चलाने में आपका उद्देश्य भीड़ को तितर-बितर करना था?

नहीं जनाब, मेरा इरादा था कि तब तक गोली चलाता रहूं जब-तक कि वे तितर-बितर न हो जायें.

क्या आपके गोली चलाते ही भीड़ तितर-बितर होने लगी थी?

तुरंत.

क्या आपने गोली चलाना जारी रखा?

जी हां.

जब भीड़ ने यह प्रकट कर दिया था कि वह तितर-बितर हो जायेगी तो आपने गोली चलाना बंद क्यों नहीं किया?

मैंने सोचा कि मेरा यह कर्त्तव्य है कि तब तक गोली चलाता रहूं। जब तक वह बिल्कुल छंट न जाये. यदि मैं कम गोली चलाता तो फिर तो मेरा गोली चलाना ही गलत होता.

फिर कई प्रश्नों के उत्तर में जनरल डायर ने बताया कि वे लगभग 10 मिनट तक गोली चलाते रहे; कि उन्हें भीड़ को तितर-बितर करने के इस प्रकार के तरीकों का कोई सैनिक अनुभव नहीं था; कि शायद बिना गोली चलाये भी वे भीड़ को तितर-बितर' कर सकते थे. किंतु उन्होंने गोली चलायी क्योंकि वे सब फिर वापस आ जाते और उन पर हंसते और उनकी स्थिति हास्यास्पद हो जाती. एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होंने गोली चलाने के लिए निम्नलिखित कारण प्रस्तुत किये-

'मुझे लगा कि वे मुझ पर और मेरे सैनिकों पर एकाएक हमला करना चाहते हैं. इससे यह साफ था कि यह एक व्यापक आंदोलन था और केवल अमृतसर तक ही सीमित नहीं था, और वहां की स्थिति एक व्यापक सैनिक कार्रवाई की स्थिति थी जो केवल अमृतसर तक ही सीमित नहीं थी.'

जनरल डायर ने 1650 गोलियां चलवायीं थीं. उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि वे बख्तरबंद गाड़ियों को बाग के अंदर ले जा सकते तो अवश्य ऐसा करते और उनसे गोलियां चलवाते; उन्होंने गोली चलाना इसलिए बंद किया कि कारतूस खत्म हो गये थे और भीड़ बहुत घनी थी. उन्होंने घायलों की प्राथमिक चिकित्सा या उन्हें ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं की थी. उनके विचार से, उस समय घायलों की सहायता करना उनका कर्त्तव्य नहीं था. वह एक चिकित्सा-सम्बंधी प्रश्न था. गोली चलना बंद होते ही वे वहां से चले आये. थोड़ी-थोड़ी देर में वे गोली चलाना रोककर उन स्थानों पर निशाना लगाने का हुक्म देते थे जहां भीड़ सबसे अधिक घनी जान पड़ती थी. यह उन्होंने इसलिए नहीं किया कि वे भागने में जल्दी नहीं कर रहे थे, बल्कि इसलिए किया कि वे (जनरल डायर) 'यह निश्चय कर चुके थे कि लोगों को वहां इकट्ठे होने की सज़ा दी जाये.'

अब हम इस घटना की और अधिक तफसीलें प्रत्यक्षदर्शी गवाहों के मुंह से प्रस्तुत करेंगे. हम लाला गिरधारीलाल के बयान का पहले ही जिक्र कर चुके हैं. उन्हें बाग के नजदीक ही एक मकान से सारा दृश्य देखने को मिला-

'मैंने सैकड़ों लोगों को जहां के तहां मरते देखा. सबसे बुरी बात यह थी कि गोलियां उन रास्तों की ओर चलाई जा रही थीं जहां से लोग बाहर की ओर भाग रहे थे. निकलने के लिए केवल 4-5 छोटे-छोटे रास्ते थे और इन सभी रास्तों पर भीड़ के ऊपर गोलियों की सचमुच बौछार हो रही थी, और... कई लोग भागती हुई भीड़ में पैरों के नीचे कुचलकर मर गये. खून की नदियां बह रही थीं. जो लोग ज़मीन पर लेट गये थे उनपर भी गोलियां चलायी गयीं. ...मृतकों या घायलों की देखभाल के लिए अधिकारियों ने कोई प्रबंध नहीं किया था. ...तब मैंने घायलों को पानी पिलाया और उनकी जो सहायता मैं कर सकता था, वह की. ...मैंने पूरी जगह का चक्कर लगाया और वहां पड़ी लगभग प्रत्येक लाश को देखा. जगह-जगह पर मृतकों के ढेर लगे हुए थे. मृतकों में वयस्क और किशोर दोनों ही थे. किसी की खोपड़ी खुल गयी थी, किसी की आंख गोली से उड़ गयी थी, किसी की नाक, किसी का सीना, किसी के हाथ-पैरों के टुकड़े-टुकड़े उड़ गये थे. ...मेरा खयाल है, उस समय 1,000 से अधिक लाशें बाग में होंगी. ...लोग जल्दी-जल्दी भाग रहे थे और बहुतों को अपने घायल या मृतक परिजनों को वहां छोड़ना पड़ा, क्योंकि उन्हें भय था कि रात के आठ बजे के बाद उनपर फिर गोली चलायी जायेगी. ❑

इसलिए स्मारक

मुझे पूरी उम्मीद है कि पंजाब स्मारक के निमित्त बम्बई अपनी विशिष्ट उदारता के साथ धन देगा। यह एक राष्ट्रीय कीर्ति-स्तम्भ है। मैंने बार-बार कहा है कि यह किसी भी अर्थ में ब्रिटिश विरोधी नहीं है। 13 अप्रैल, 1919 के दुर्भाग्यपूर्ण दिवस को जो निर्दोष लोग मार डाले गये, यदि हम उनकी स्मृति को संजोकर नहीं रखते तो हम अपने-आपको एक राष्ट्र कह सकने योग्य नहीं हैं। आशा है, अंग्रेजों के लिए भी इस स्मारक के निमित्त चंदा देना संभव होगा। उनका सहयोग इस बात का परिचायक होगा कि यह स्मारक जाति-विशेष से सम्बद्ध नहीं है। इसके अलावा इसका हंटर समिति के निष्कर्षों से भी, चाहे वे अनुकूल हों या प्रतिकूल, कोई सरोकार नहीं है। यह बात सरकार द्वारा स्वीकार की जा चुकी है कि जो लोग मारे गये, वे निरपराध थे। भूमि के जिस टुकड़े पर इतने निर्दोष लोगों का खून बहा है, उसे राष्ट्र की सम्पत्ति बना देना और उस पर एक ऐसा राष्ट्रीय स्मारक खड़ा करना भारत का कर्तव्य है जो उन मृतकों की स्मृति को सुरक्षित रखते हुए भी हर प्रकार के घृणा-द्वेष से मुक्त होगा। हंटर समिति के निष्कर्ष चाहे जो भी हों, वे भारत को सम्भवतः उसके इस दायित्व से मुक्त नहीं कर सकते। **–मो. क. गांधी**

बम्बई, 6 अप्रैल, 1920

युद्ध की विभीषिका

युद्धों को टाला जा सकता है

❑ भवानी शंकर कुसुम

पिछले दिनों पुलवामा हमले के बाद हुई उन्मादी घटनाओं के बीच नागरिक स्तर पर भारत और पाकिस्तान में हुए प्रयत्नों के उत्साहजनक एवं सकारात्मक समाचार युद्ध उन्माद में निमग्न हमारी मीडिया की नजरों से ओझल हो गये। भारत की तरह लाहौर और इस्लामाबाद में भी वहां के नागरिकों ने प्रदर्शन कर दोनों देशों को युद्ध त्याग कर बातचीत करने का आग्रह किया।

उन्होंने अपने प्रदर्शन में जो पोस्टर बनाए, उन पर लिखा था-'हम युद्ध का अन्त नहीं करेंगे, तो युद्ध हमारा अन्त कर देगा।' लाहौर के धर्माध्यक्ष सेबेस्टियन शॉ ने एक वक्तव्य में कहा-'सभी मुद्दों को शान्ति वार्ताओं से सुलझाया जाना चाहिए। केवल शस्त्रों के परित्याग से ही शान्ति की स्थापना हो सकेगी'।

भारत वर्ष दुनिया का एकमात्र देश है, जिसे महाभारत जैसे विकराल युद्ध की विभीषिका झेलने के साथ ही युद्धों के शमन और शान्ति के अप्रतिम प्रयत्न करने का भी श्रेय हासिल है। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र में कौरव-पाण्डवों के बीच हुए पौराणिक युद्ध में आज के अफगानिस्तान सहित सम्पूर्ण भारत के शासकों ने भाग लिया था। अट्ठारह अक्षौहिणी सेना (कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी तथा पाण्डवों की सात अक्षौहिणी सेना- हाथी, घोड़ों तथा पैदल सहित 634,243 सैनिक एक अक्षौहिणी में होते हैं) के लगभग 1 करोड़ 16 हजार 374 सैनिक मारे गये थे। इसके अतिरिक्त दोनों पक्षों के हजारों निर्दोष नागरिक भी मारे गये, जिनकी कभी गणना नहीं हो सकी। इस दृष्टि से महाभारत को यदि प्राचीन विश्व का प्रथम विश्वयुद्ध कहा जाय, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इसके बाद 262 ई. पू. अर्थात आज से 2281 वर्ष पहले हुए कलिंग युद्ध में एक लाख लोगों के मारे जाने का अनुमान है।

महाभारत और कलिंग दोनों ही युद्धों में इनके नायकों को पश्चाताप हुआ। महान धनुर्धर अर्जुन को युद्ध से पहले, तो सम्राट अशोक को युद्ध के बाद घोर ग्लानि का अनुभव हुआ, ऐसा इतिहास हमें बताता है। महाभारत युद्ध को टालने के लिए ''शान्ति किसी भी मूल्य पर मिले, ले लेनी चाहिये'' के उद्देश्य से शान्ति प्रस्ताव लेकर स्वयं कृष्ण धृतराष्ट्र के दरबार में उपस्थित होते हैं, लेकिन युद्धोन्माद से ग्रस्त दुर्योधन उन्हें 'सुई की नोक' जितनी धरती भी नहीं देने की अपनी हठ से निराश लौटा देता है। इसी महाभारत युद्ध की पूर्व सन्ध्या में श्री कृष्ण के मुख से विश्व को कर्म का सन्देश देने वाली गीता का उद्घोष होता है।

इसी तरह कलिंग युद्ध के क्षेत्र में शवों के ढेर पर किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े सम्राट अशोक को अपनी दिग्विजय पर इतना क्षोभ और पश्चाताप होता है कि वे भविष्य में कभी युद्ध न करने की शपथ लेकर शस्त्रों का त्याग कर देते हैं। उनके प्रयत्नों से न केवल भारत, बल्कि समूचे एशियाई देशों में बौद्ध धर्म के शान्ति, मैत्री और अहिंसा के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार-प्रसार . हुआ और अशोक चक्र स्वतंत्र भारत में शान्तिमय शासन का प्रतीक चिन्ह बन गया।

ज्ञान, भक्ति और कर्म पर आधारित कृष्ण की गीता के परिप्रेक्ष्य में देखने से यह समझ में आता है कि मनुष्य के अन्तस में उपजे लोभ, मोह और क्रोध से ही क्लेश का जन्म होता है, जिसके परिणाम स्वरूप युद्ध की स्थिति बनती है।

यों तो युद्ध होने के मुख्य कारण धनलिप्सा, राज्य विस्तार, धर्म, राष्ट्रीयता, प्रतिशोध, गृहयुद्ध, क्रान्ति या विद्रोह और आत्मरक्षा आदि माने जाते हैं, लेकिन अब तक के युद्धों के इतिहास को देखें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सभी युद्ध धन, धरती और धर्म को लेकर ही हुए हैं।

झेलम का युद्ध, अमेरिका का स्वतंत्रता का युद्ध, वाटरलू, प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, अरब-इजरायल युद्ध तथा चीन-जापान युद्ध - ये मानव इतिहास के सात प्रमुख युद्ध माने जाते हैं, जिनमें करोड़ों लोगों के मारे जाने की जानकारी मिलती है।

पिछली सहस्राब्दि के दौरान भारत में हुए युद्धों पर एक नजर डाली जाये तो निम्न नौ युद्ध हमारे सामने एक ऐतिहासिक घटनाचक्र प्रकट करते हैं :

* 1191 में मोहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के मध्य लड़ा गया तराई का युद्ध, जिसमें चौहान की विजय हुई।
* 1527 के खानवा के युद्ध में बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।
* 1576 में हल्दीघाटी में अकबर और महाराणा प्रताप के बीच ऐतिहासिक युद्ध हुआ।
* 1757 का अंग्रेजी सेना और नवाब सिराजुद्दौला के मध्य लड़ा गया प्लासी का युद्ध, जिसमें सिराजुद्दौला की हार के साथ ही भारत में अंग्रेजी शासन की नींव पड़ी।
* 1767 का हैदरअली और अंग्रेजों के बीच हुआ मैसूर युद्ध, जिसमें अंग्रेजों की हार हुई।
* 1799 में टीपू सुल्तान और अंग्रेजों के बीच हुआ युद्ध, जिसमें टीपू की हार हुई।
* 1962 का भारत-चीन युद्ध, जिसमें भारत को सीमा के कुछ हिस्सों को छोड़ना पड़ा।
* 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, जिसमें पाकिस्तान की हार हुई।
* 1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध, जिसमें बांगलादेश का निर्माण हुआ।

इस कालावधि में छोटे-बड़े अन्य अनेक युद्ध हुए हैं, जिन की गणना करें, तो सूची काफी लम्बी हो जायेगी। लेकिन यहां युद्धों की अथवा उनमें मरने वालों की संख्या की गणना करना उद्देश्य नहीं है, बल्कि उनके कारणों और परिणामों पर दृष्टिपात करते हुए युद्धों को टाले जाने पर विचार करना अभीप्सित है।

पौराणिक महाभारत तथा ऐतिहासिक कलिंग युद्ध दोनों ही धरती अर्थात अपने राज्य के विस्तार के लिए हुए, यह हम जानते हैं। पहले धन की बात करें, मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खान से लेकर मुस्लिम आक्रान्ता गौरी, गजनी और बाबर तक सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान को लूटने के लिये ही आये और क्षेत्रीय जनपदों में विभाजित तथा अपने अपने राज्यों की सीमाओं के वैभव से मंत्रमुग्ध शासकों को अनेक बार जी भर कर लूटा।

यूरोप के औद्योगीकरण और भारत के स्वतंत्र होने के बाद एशियाई और अफ्रीकी देशों में चली आजादी की मुहिम के बाद के काल में हुए युद्ध धरती अर्थात विस्तारवादी सोच को लेकर हुए, जिनमें अमेरिका-वियतनाम, चीन-भारत और भारत-पाकिस्तान युद्ध भी शामिल हैं। धर्म के नाम पर पिछले चार पांच दशकों में हुए युद्धों को, जो दुनिया के कई भागों में आज भी चल रहे हैं, धर्मान्ध समूहों द्वारा संचालित आतंकवाद कहना समीचीन होगा। इस सम्बन्ध में यह ध्यान में रखना चाहिये कि धार्मिक व्यक्ति कभी हिंसक नहीं हो सकता। धर्म हमें जोड़ता है, तोड़ता नहीं। दुर्भाग्य से धर्म के ठेकेदारों का फैलाया हुआ यह ऐसा माया जाल है, जिसमें अशिक्षा और गरीबी से त्रस्त लोग बहुत जल्दी फंसते हैं। आज भारत के कश्मीर सहित दुनिया के अनेक देशों में यही हो रहा है।

युद्ध के परिणामों की चर्चा करते समय यह देखना होगा कि युद्ध में किसे क्या खोना पड़ता है? इतिहास साक्षी है कि युद्धों में अनेक राज्यों ने न केवल जान-माल की क्षति उठायी है, बल्कि वहां की कला, संस्कृति और सभ्यता भी नष्ट हो गयी है। युद्धों में वहां के सैनिक ही नहीं, बल्कि अबोध बच्चे, औरतें, बूढ़े और जवान नागरिक सभी शिकार बनते हैं, जिनका युद्ध से कोई लेना-देना नहीं होता। यह सच्चाई है कि युद्ध में उन्माद की अवस्था होती है और उन्माद से युद्ध नहीं जीता जा सकता। यह केवल भ्रम है कि युद्ध सिर्फ सेना लड़ती है। असल में युद्ध पूरा देश लड़ता है।

युद्ध का कारण कुछ भी हो परन्तु परिणाम सदैव एक-सा ही होता हैं। हजारों की संख्या में लोगों की जानें जाती हैं, कितने ही घर नष्ट हो जाते हैं, कितनी माताओं की गोद सूनी हो जाती है तथा कितनी ही महिलाएं विधवा का जीवन जीने के लिए बाध्य होती हैं। युद्ध के कारण परिवार और समाज टूटता है। युद्ध राष्ट्रों को वर्षों पीछे धकेल देते हैं, जिन्हें फिर नए सिरे से विकास के लिए संघर्ष करना पड़ता है। विश्व के राजनीतिज्ञों को इसका आकलन करना चाहिए। यदि वे निजी स्वार्थ से ऊपर उठ कर इसके परिणामों को ध्यान में रखें, तो युद्ध की विभीषिका से बचा जा सकता है। आपसी विवादों को यदि वे बातचीत से सुलझाने का प्रयास करें, तो हजारों बच्चों को अनाथ होने से तथा हजारों घरों को नष्ट होने से बचाया जा सकता है।

युद्ध के लिए उन्मादी लोगों को दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में बने शरणार्थी शिविरों में रहने वाले लोगों की दुर्दशा देखने की कोशिश करनी चाहिए। किसी शरणार्थी से पूछिए कि युद्ध क्या होता है? इन दिनों हमारे देश में जो लोग पाकिस्तान से 'आर-पार की लड़ाई' की बात कर रहे हैं, वे इस भ्रम में हैं कि युद्ध से पाकिस्तान बरबाद हो जाएगा। असल में जिन्होंने भारत-पाक विभाजन का दंश झेला है, वे ही युद्ध की त्रासदी को जानते हैं। तथाकथित राष्ट्रभक्ति से उत्प्रेरित ये लोग यह नहीं समझते कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं है।

जब कभी कहीं भी युद्ध की बात होती है, तो मन विचलित हो जाता है। सोचने को विवश होना पड़ता है कि कहां तो हम 'ग्लोबल' होने की बात कर रहे हैं, बाजार का विस्तार कर रहे हैं, अपने बच्चों को दुनिया के विख्यात विश्वविद्यालयों में शिक्षा दिला रहे हैं, अपनी-अपनी कला का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन कर रहे हैं और कहां पड़ोसियों के साथ भी शान्ति से रहने का प्रयत्न नहीं कर पा रहे? आज का इलेक्ट्रोनिक मीडिया, जो प्रायः आग में घी डालने का काम करता है, उसे गम्भीरता से सोचना चाहिए कि क्या वे देश और मानवता का हित कर रहे हैं? हमें खुल कर कहना चाहिए कि युद्ध की बात मत कीजिए। जिस बेताबी से हम युद्ध और 'ईंट का जवाब पत्थर' से देने की बात करते हैं, उतनी ही तीव्रता से क्या शान्ति, सह अस्तित्व और भाईचारे की बात नहीं कर सकते? यदि शान्तिमय वातावरण में ईमानदारी और गम्भीरता के साथ बातचीत हो, तो सभी समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है, बशर्ते कि पहला और अन्तिम उपाय भी शान्ति हो, युद्ध तो कभी भी नहीं।

यही है गांधी का मार्ग। क्या गांधी का भारत शान्ति की इस पगडण्डी पर अपने कदम बढ़ाने की विश्वसनीय पहल करेगा? ❑

अधिसूचना

दिनांक 25 मार्च 2019 को सर्व सेवा संघ अध्यक्ष महादेव विद्रोही के आदेश से मुख्यालय द्वारा जारी एक अधिसूचना के अनुसार संगठन के कार्यों को गति देने की दृष्टि से निम्न नियुक्तियां की गयी हैं, जो तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गयी हैं—

भूदान ग्रामदान समिति	:	गौरांग महापात्र (संयोजक)
खादी ग्रामोद्योग समिति	:	लक्ष्मीदास (संयोजक)
महिला समिति	:	लता ताई राजपूत (संयोजक)
सर्वोदय जगत	:	बिमल कुमार (संपादक)
	:	प्रेम प्रकाश (सह संपादक)
संपादक मंडल	:	डॉ. रामजी सिंह, भवानी शंकर कुसुम, प्रो. सोमनाथ रोडे, अरविन्द अंजुम, रमेश ओझा, अशोक मोती।

भारत में बेरोज़गारी

❑ विनीत खरे

जब बीजेपी सरकार ने 2014 में सत्ता संभाली थी तो भारत में रोज़गार पैदा करना सरकार की योजनाओं का मुख्य हिस्सा था. इस संबंध में आधिकारिक रूप से प्रकाशित आंकड़े बहुत सीमित हैं, लेकिन लीक हुए बेरोज़गारी के आंकड़ों ने भारत में रोज़गार की स्थिति को लेकर एक ज़बरदस्त बहस छेड़ दी है. विपक्षी दल कांग्रेस ने सरकार पर नौकरी से जुड़े अपने वादे पूरे न करने का आरोप लगाया है.

तो क्या बेरोज़गारी बढ़ी है? : 11 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए, बीबीसी रियलिटी चेक प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा किए गए दावों और वादों की पड़ताल कर रहा है. ये विवाद तब शुरू हुआ जब एक स्थानीय मीडिया ने राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) के लीक हुए एक अध्ययन के हवाले से बताया कि भारत में बेरोज़गारी दर अपने चार दशकों के सबसे उच्च स्तर 6.1% पर पहुंच गई है. एनएसएसओ बेरोज़गारी का आकलन करने सहित देश में कई बड़े सर्वेक्षण करता है.

राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (एनएससी) के कार्यकारी अध्यक्ष ने विरोध करते हुए इस्तीफ़ा दे दिया और इन आंकड़ों की पुष्टि भी की. लेकिन सरकार की ओर से कहा गया कि ये अध्ययन सिर्फ एक मसौदा है. रोज़गार संकट को लेकर दिए गए सुझावों को भी ख़ारिज कर दिया गया. साथ ही आर्थिक विकास बढ़ने के संकेत दिए गये. इसके बाद 100 से ज्यादा अर्थशास्त्रियों और समाज विज्ञान के प्रोफ़ेसरों ने एक खुला पत्र लिखकर दावा किया था कि भारत की आंकड़े जुटाने वाली संस्थाएं संदेह के घेरे में आ गई हैं क्योंकि वो न सिर्फ दबाव में बल्कि राजनीतिक नियंत्रण में काम कर रही हैं.''

आखिरी एनएसएसओ सर्वेक्षण साल 2012 में आया था. साल 2012 में बेरोज़गारी का आंकड़ा 2.7% था. क्या इन दो सर्वेक्षणों की तुलना हो सकती है? लीक हुई इस नई रिपोर्ट को देखे बिना उसकी 2012 में आए आखिरी सर्वेक्षण से तुलना करना मुश्किल है और इसलिए ये पता लगाना भी मुश्किल है कि बेरोज़गारी 40 साल की ऊंचाई पर है या नहीं. हालांकि, अंग्रेज़ी अख़बार द हिंदू को दिए एक साक्षात्कार में सांख्यिकी आयोग के एक पूर्व अध्यक्ष ने कहा था, ''दोनों के तरीक़े एक जैसे हैं और उनकी तुलना करने में कोई समस्या नहीं है.''

आंकड़ों के अन्य स्त्रोत : अंतरराष्ट्रीय श्रम संस्थान के आंकड़े दिखाते हैं कि भारत में 2012 और 2014 के बीच बेरोज़गारी कम हुई है लेकिन 2018 में 3.5% तक बढ़ी है. हालांकि, यह सिर्फ 2012 के एनएसएसओ सर्वेक्षण पर आधारित एक अनुमान है. 2010 से भारतीय श्रम मंत्रालय ने अपनी कार्यप्रणाली के आधार पर घरेलू सर्वेक्षण करना शुरू कर दिया था. 2015 में आखिरी बार हुआ सर्वेक्षण 5% बेरोज़गारी दर दिखाता है और यह दर पिछले कुछ सालों में बढ़ी है. उनके आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की बेरोज़गारी का आंकड़ा अधिक है.

एक भारतीय थिंक टैंक कहता है कि यह आंकड़ा बढ़ रहा है. मुंबई आधारित एक थिंक टैंक सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) के मुताबिक़ पिछले साल फ़रवरी में बेरोज़गारी दर 5.9% से 7.2% पर पहुंच गई थी. यह संस्थान अपना ख़ुद का सर्वेक्षण करता है. हालांकि, इसका सर्वेक्षण एनएसएसओ के मुक़ाबले छोटे पैमाने पर होता है.

श्रम भागीदारी दर में कमी : रोज़गार बाज़ार को मापने का एक और तरीक़ा श्रम भागीदारी दर है. इसका मतलब है, रोज़गार चाहने वाली 15 साल से अधिक आयु वर्ग की कार्यशील आबादी का अनुपात. सीएमआईई के प्रमुख महेश व्यास कहते हैं, 2016 में श्रम भागीदारी का 47-48 प्रतिशत आंकड़ा अब गिरकर 43 प्रतिशत पर आ गया है. इसका मतलब है कि पांच प्रतिशत कार्यशील आबादी श्रम बल से बाहर हो गई है.'' वह कहते हैं कि इसके पीछे बेरोज़गारी और नौकरी को लेकर असंतुष्टि कारण हो सकते हैं.

भारत में नौकरियों को प्रभावित करने वाले कारक : 2016 में, भारत में भ्रष्टाचार और अवैध नग़दी पर रोक के लिए 500 और 1000 रुपये के नोटों पर प्रतिबंध लगाया गया था. इस प्रक्रिया को विमुद्रीकरण कहते हैं. इसे आम तौर पर नोटबंदी भी कहा जाता है. एक विश्लेषण के मुताबिक़ नोटबंदी के कारण कम से कम 35 करोड़ नौकरियां गई हैं और इससे श्रम बल में युवाओं की भागीदारी पर असर पड़ा है. 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों के माध्यम से देश चीन और ताइवान जैसे विनिर्माण केंद्रों का अनुकरण करने की कोशिश कर रहा है ताकि महंगे आयात में कमी आए, तकनीकी आधार विकसित हो और नौकरियां पैदा हों.

हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि ढांचागत बाधाएं, जटिल श्रम क़ानून और नौकरशाही ने प्रगति के रास्ते को रोक दिया है. अर्थशास्त्री जिस एक और कारक की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं, वो है भारत में बढ़ता मशीनीकरण. अर्थशास्त्री विवेक कौल कहते हैं, ''अगर कोई कंपनी भारत में विस्तार करना चाहती है, तो वह कर्मचारी रखने की बजाए मशीनों के इस्तेमाल को प्राथमिकता देती है.''

(बीबीसी) ❑

सत्तर साल पहले

अन्त्योदय से विश्वोदय की ओर

❑ दादा धर्माधिकारी

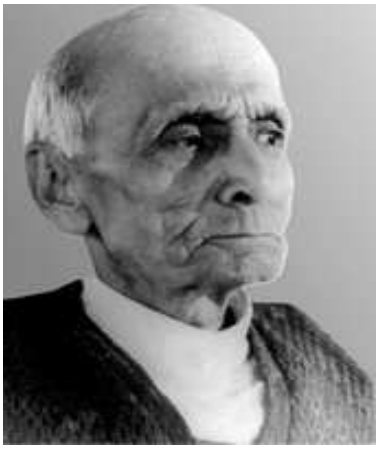

काफी पहले की बात है। एक रियासत की राजधानी में हम शहर के बाहर सुंदर बगीचे में बसा हुआ राजमहल देखने गये। वहां की एक एक चीज अनुपम थी। देखते ही बनती थी। वे हाथी दांत के उलंग, सुंदर सुंदर शीशे, चांदी से मढ़ी हुई कुर्सियां, और कोच। उस वैभव का कौन वर्णन करे? लेकिन उसमें मनुष्यता का स्पर्श कहीं नहीं था। महल के मालिक के स्पर्श की कोई निशानी नहीं थी। दफ्तर के बाबू से पूछा, 'यह महल किसका है?'

कुछ हंसकर बोले, 'यह भी खूब पूछा! महाराज का और किसका?'

मैंने पूछा, 'महाराज कभी इसमें रहते हैं? जवाब मिला, 'नहीं।'

'तो फिर इसमें कौन रहता है?' उत्तर मिला, 'कोई नहीं'।

'तुम लोग कहां रहते हो?'

'अपने अपने घरों में?'

'फिर यहां क्यों आते हो?'

'इसलिए कि यहां कोई रहने न पाये, इन शीशों में कोई देखने न पाये, इन मंचकों पर कोई सोने न पाये, इन कुर्सियों पर कोई बैठने न पाये। इसी काम के लिए हमको तैनात किया गया है और इसी की तनख्वाह मिलती है।'

उस वक्त वह बात कुछ अटपटी-सी जरूर लगी लेकिन स्वाभाविक भी मालूम हुई। आज भी जब कभी उस महल की याद आती है, त्तो आज की दुनिया का चित्र आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। दुनिया में उपकरण जुटाये जा रहे हैं। सुख के साधन इकट्ठे किये जा रहे हैं, रोज नयी नयी सामग्रियों का उत्पादन बढ़ाया जाता है, लेकिन मनुष्यों के एक गिरोह को यह फिक्र है कि कहीं उन साधनों का उपयोग दूसरा गिरोह न कर ले। इसलिए मकान पर एक दूसरे को कब्जा न करने देन की ही हरेक को फिक्र है। मकान में भीड़ है। शोरगुल भी बहुत है। लेकिन रहने वालों का पता नहीं। एक दूसरे से झगड़ने वालों की रेलारेल, ठेलाठेल मची हुई है। कोई कहता है यह प्रतियोगिता है, कोई कहता है स्वास्थ्यपूर्ण स्पर्द्धा है, कोई कहता है यह चढ़ा-ऊपरी मनुष्य का स्वभाव ही है। बात कहने की शास्त्रियों और वैज्ञानिकों की अनोखी सिफ़त होती है। मामूली आदमी इतना ही जानता है कि जो दुनिया बन रही है वह मनुष्य के नाप की नहीं बन रही है। उसमें मनुष्य अपने आपको अजनबी, अपरिचित-सा पाता है।

सर्वोदय का उद्देश्य संसार को मनुष्य के नाप का, मनुष्य के जीने और फूलने-फलने के लिए अनुकूल बनाना है। 'मनुष्य के लिए' से मतलब किसी एक मनुष्य के लिए या अधिक से अधिक मनुष्यों के लिए नहीं। 'मनुष्य के लिए' यानी हरएक मनुष्य के लिए, सभी मनुष्यों के लिए। उपयोगितावादी मिल ने कहा, 'हमारा उद्दिष्ट अधिक से अधिक मनुष्यों का अधिक से अधिक सुख है।' सर्वोदय के प्रवक्ता गांधी ने कहा, 'नहीं, नहीं। हमारा उद्दिष्ट सभी मनुष्यों की अधिक से अधिक भलाई है।'

मिल ने एक और बड़ी मजे की बात कह डाली। उसने कहा, 'अगर हरएक आदमी अपना अपना भला देख ले तो कुल मिलाकर सब का भला हो जायेगा।' लेकिन इसे सामाजिकता या समाजशीलता नहीं कहते। समाज का हरएक व्यक्ति यदि अपने लिए जिये तो सब मिलकर सब के लिए नहीं जियेंगे। हरेक अपने लिए जियेगा और अपने जीने के लिए दूसरों के जीने में रुकावट भी करेगा। इसी का नाम स्पर्द्धा, विग्रह, होड़ या संघर्ष है। स्वार्थों के इस विरोध में से आज के समाज की सारी उलझनें और दिक्कतें पैदा हुई हैं।

जो नीचे है वह ऊपर आना चाहता है और जो पीछे है वह आगे आना चाहता है। नीचे वाले ऊपर वालों को दबोचकर ऊपर आने की कोशिश करते हैं और पीछे वाले आगे वालों को पीछे की तरफ खींचकर खुद आगे बढ़ना चाहते हैं। इसमें से वर्ग संघर्ष की मनोवृत्ति पैदा होती है। वर्ग संघर्ष की भावना ऐसी मनोदशा पैदा

'सर्वोदय' के प्रकाशन पर शुभकामनाएं

'सर्वोदय' को में अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं। मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि यह पत्रिका फिर से निकल रही है। आज कल की पेचीदा समस्याओं में यह जरूरी मालूम होता है कि गांधीजी के सिद्धांत और उनके बताये हुए रचनात्मक कार्यक्रमों की ओर जनता का ध्यान दिलाया जाये। मैं आशा करता हूं कि 'सर्वोदय' इस काम में सफलता हासिल करेगा।

7-8-1949 **–जवाहरलाल नेहरू**

× × ×

गांधी ने विचार चाहे हजारों प्रकट किये हों, लेकिन वे भाषा एक ही बोले। उनके प्रतिपादन का सबसे श्रेष्ठ विषय 'सर्वोदय' ही था। लेकिन 'सबके उत्कर्ष' में उन लाखों साधनों का समावेश है, जिनसे हम अपना ध्येय प्राप्त करेंगे और आज के दुःखों का जिन लाखों मोर्चों पर सामना करना है, उन मोर्चों का भी। इसलिए हमें जिस चीज को अपने सामने रखना है और जिसे नये रूप में पेश करना है, वह है हमारे राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित समस्या। इस समस्या के समाधान के लिए हर घड़ी अध्ययन की, हर दिन विचार करने की और हर महीने विचारों के निवेदन की आवश्यकता है। इन उदात्त कार्यों की परिपूर्ति में 'सर्वोदय' को पूरी पूरी सफलता मिले।

22-7-1949 **–मो. पट्टाभि सीतारमैया**

× × ×

'सर्वोदय' सन् 1942 के अगस्त महीने में बंद हुआ था। वह आज फिर से शुरू होता है। पहले जब चलता था तब हिन्दुस्तान पराधीन था। पराधीनता में सुख की अपेक्षा हमने स्वप्न में भी नहीं की थी, लेकिन स्वमान-रक्षा का ख्याल हम नहीं छोड़ सकते थे। जिन सिद्धांतों के लिए सर्वोदय चलता था उन्हीं उसूलों की रक्षा के लिए उसे बंद होना पड़ा। बंद होकर भी उसने सेवा ही की। सर्वोदय सो गया, लेकिन देश नहीं सोया। देश ने यथाशक्ति सर्वोदय के सिद्धांतों का पालन करते हुए आजादी की मंजिल तय की और आजाद दुनिया के दरबार में अपना स्थान ले लिया।

सर्वोदय सत्ययुग की स्थापना का प्रारंभ है। अहिंसा उसका प्राण है और सत्याग्रह उसकी शक्ति है। सर्वोदय सत्ययुग की स्थापना के लिए प्रस्तुत है। स्वराज्य यानी सर्वराज्य उसका राजनैतिक आदर्श है और विश्वकुटुम्ब, उसका अंतिम आदर्श।

6-8-1949 **–काका कालेलकर**

करती है कि मजदूर सोचता है कि 'जब मेरा राज होगा तो आज के सारे हुजूरों को कोल्हू में जोतूंगा। तब इन्हें पता चलेगा कि हमें क्या कष्ट होता है।' उसकी कल्पना के रामराज में आज के हुजूर मजूर बनेंगे और आज के मजूर हुजूर बनेंगे। श्रमिकों के अधिनायकत्व का यही अर्थ उसकी समझ में आता है। वह न आपका भौतिक वाद जानता है और न मार्क्सवादी क्रांति की प्रक्रिया। किसान, मजदूरों की अनियंत्रित सत्ता का उसके दिल में जो अर्थ है वह इतना ही है, आज के किसान, मजदूर कल राजा बनेंगे और आज के अमीर-उमरा तथा सेठ-साहूकार उनके गुलाम बनेंगे। पुराने जमाने के यमदंड की कल्पना से इसकी कुछ तुलना की जा सकती है। यहां पर जो दूसरों के साथ जिस तरह का अन्याय करता है उसे यमराज उसी तरह की सौगुनी यंत्रणा देते हैं। साधारण मनुष्य के दिल में वर्ग संघर्ष प्रतिशोध और बदले की प्रक्रिया में परिणत हो जाता है।

अपनी विचारधारा की विशेषता बतलाने के लिए गांधीजी ने कहा था कि 'मेरे सपने के रामराज में राजा और रंक का रुतबा बराबरी का होगा।' बड़े-बड़े बुद्धिमानों ने उनकी बात को जबर्दस्ती गलत समझा। बड़ी कड़ी आलोचना हुई गांधीजी की। एक विद्वान आलोचक ने लिखा, 'क्या खूब, इस रामराज में राजा भी होंगे और रंक भी होंगे, ऐसे रामराज को जयरामजी की! वह गांधीजी को ही मुबारक हो।'

गांधीजी की बात ठंडे दिमाग से सोचने की फुर्सत किसे थी? अगर मैं यह कहूं कि हमारी समाज व्यवस्था में ब्राह्मण और भंगी समान होंगे तो क्या उसका यह मतलब होगा कि ब्राह्मण ब्राह्मण रहेगा और भंगी भंगी रहेगा? मेरे कथन के दो ही तर्कसंगत अर्थ हो सकते हैं। एक तो यह कि न ब्राह्मण ब्राह्मण होगा और न भंगी भंगी होगा। या फिर यह कि जो ब्राह्मण है वह भंगी भी होगा, और जो भंगी है वह ब्राह्मण भी होगा। तभी ब्राह्मण और भंगी की प्रतिष्ठा समान होगी। गांधीजी का मतलब यह था कि मेरे रामराज में राव ही रंक होगा और रंक ही राव होगा। यानी राव-रंक में कोई भेद नहीं रहेगा। आज का राव कल का रंक नहीं होगा और आज का रंक कल का राव नहीं होगा। जो आज हुजूर हैं वे हुजूर नहीं रहेंगे, जो मजूर हैं वे मजूर नहीं रहेंगे, दोनों हुजूर होंगे, दोनों मजूर होंगे। सभी हुजूर होंगे, सभी मजूर होंगे। निषेधात्मक भाषा में न कोई हुजूर होगा, न कोई मजूर होगा। इसे वर्गहीन समाज की भाषा कहते हैं। रामराज की भाषा में 'राम राजा, राम परजा, राम साहूकार' होगा। यह गांधीजी का रामराज है। बाकी सब हरामराज है।

हरामराज का मतलब भी जरा समझ लें। जो दूसरों के भरोसे खाता है उसे लोग मुफ्तखोर कहते हैं। मुफ्त के खाने वाले को हराम का खाने वाला भी कहते हैं। जो दूसरों की मेहनत का फल बगैर कीमत चुकाये चखता है उसे हराम का खाने वाला कहते हैं। उचित परिश्रम के बिना उपभोग की सुविधा जिस व्यवस्था में हो वह हरामराज है। जुआ और सट्टा हरामराज के प्रमुख प्रतीक हैं। कम से कम मेहनत का ज्यादा से ज्यादा फल सट्टे और जूए का मूलभूत सिद्धांत है। हमने लाटरी में एक रुपये का टिकट खरीदा, बदले में एक मोटर मिल गयी। बड़े भाग्यवान साबित हुए।दूसरे ने भी एक रुपये का टिकट खरीदा, बदले में लेमनड्राप की एक टिकिया मिली। बेचारा अपनी किस्मत को कोसने लगा। इस तरह की समाज व्यवस्था में एक हद तक 'टका सेर भाजी टका सेर खाजा' वाला न्याय होता है। यह चौपट राज है। जिस अर्थव्यवस्था में मुफ्तखोरों की और अवकाशभोगियों की प्रतिष्ठा है वह रामराज नहीं, हरामराज है। उसमें सर्वोदय की गुंजाइश कहां?

सर्वोदय की व्यवस्था में कोई अपने लिए नहीं जीता। हरएक सबके लिए जीता है इसीलिए सब मिलकर सब की संयुक्त भलाई सिद्ध करते हैं। अगर हर एक अपने अपने लिए जिये तो जो सबसे तगड़ा होगा वही सबसे अधिक सफल भी होगा। जो सबसे अधिक समर्थ होगा वही जीवन का अधिकारी होगा। यह समाज धर्म नहीं है, इसे मत्स्य-न्याय कहते हैं। मत्स्य-न्याय से कोई समाज नहीं बनता। कोई झुंड तक नहीं बनता। भेड़िया सबसे क्रूर और पेटू जानवर माना जाता है लेकिन भेड़िये झुंड बनाकर रहते हैं। अर्थात वे एक दूसरे को नहीं खाते। भेड़िये भी एक दूसरे को खाने लगें तो उनका झुंड नहीं बनेगा। चोर एक दूसरे की चोरी करने लगें तो उनका गिरोह नहीं बनेगा। उन्हें भी आपस में ईमान निबाहना होता है। सामाजिकता की यह शर्त है कि आदमी एक दूसरे को न खाये और न चूसे। इसी का नाम तो अहिंसक और शोषणहीन समाज है।

उस दिन राऊ में विनोबा ने कहा कि 'सर्वोदय का आरंभ अन्त्योदय से होता है।' रवि ठाकुर की भाषा में 'सबार नीचे सबार पीछे।' यानी जो सबसे नीचे और सबसे पीछे है उसको इस पृथ्वी की विरासत मिलेगी। एक मित्र ने मुझसे कहा कि 'विनोबा ने बड़ी जबर्दस्त बात कह दी। उसका तो यह मतलब हुआ कि जो सबसे नीचे है वह मीर होगा। और आज जो अव्वल है वह फिसड्डी होगा।' यह सर्वोदय की कल्पना नहीं है। आखिर पहला और फिसड्डी ये दो सिरे हैं। कौन सा पहला और कौन सा आखिरी, इसका निश्चय गुण के अनुसार होता है। लेकिन जब सभी समान गुणवान हों तो चाहे जिस सिरे से पहला गिन सकते हैं। पहले और आखिरी में कोई वास्तविक भेद नहीं होगा, दोनों बराबर होंगे। जैसे पृथ्वी पर पूरब और पश्चिम है, पृथ्वी गोल है, इसलिए पूरब पश्चिम में परिणत हो जाती है और पश्चिम का ही पर्यवसान पूर्व में हो जाता है; उसी प्रकार सर्वोदय में न कोई आद्य होगा न अंत्य होगा। आदि और अंत दोनों समान होंगे। तभी तो अन्त्योदय सर्वोदय होगा। सर्वोदय की प्रक्रिया का आरंभ अन्त्योदय से है। उसकी परिसमाप्ति विश्वोदय में है। सर्वोदय के मानी है सर्वतः उदय, सार्वत्रिक उदय और सार्वजनिक उदय। ❑

156 देशों में भारत 7 स्थान गिरकर 140वें नंबर पर

संयुक्त राष्ट्र संघ का सस्टेनेबल डेवलपमेंट सल्यूशंस नेटवर्क हर साल दुनिया के देशों की हैप्पीनेस रिपोर्ट जारी करता है। यह रिपोर्ट इस आधार पर तैयार की जाती है कि जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं सहित मानव विकास के तमाम संभव सूचकांकों पर किस देश के नागरिकों और आम जन-जीवन को कितनी खुशहाली हासिल हुई है।

पिछले दिनों न्यूयार्क में जारी की गयी 2019 की वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार यूरोप के सात देश जहां सूची के टॉपटेन में स्थान बनाने में सफल रहे, वहीं एशिया महाद्वीप का एक भी देश टॉप ट्वेंटी में भी जगह नहीं बना सका है। यद्यपि पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष ब्रिटेन ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया है। कुल 156 देशों की इस सूची में दक्षिण सूडान को खुशहाली के पैमाने पर सबसे निचले पायदान पर रखा गया है, वहीं फिनलैंड ने लगातार दूसरे वर्ष सूची में अपना पहला स्थान बरकारार रखा है।

आश्चर्यजनक तथ्य ये है कि 156 देशों की इस अंतर्राष्ट्रीय सूची में भारत को 140वां स्थान मिला है। उल्लेखनीय है कि पिछली सूची की तुलना में भारत 7 स्थान नीचे गिरा है। यह शर्मनाक स्थिति तब है जब पिछले पांच वर्षों से विकास और आम जनजीवन में खुशहाली लाये जाने के सरकारी दावों ने भारत की हवा में निरर्थक सनसनी घोल रखी है।

वातायन

विभाजन के मुद्दे पर गांधी को समझ नहीं पाये हम

❑ प्रो. सोमनाथ रोडे

8 से 9 सितम्बर 2013 को बसमतनगर, हिंगोली, महाराष्ट्र स्थित ग्राम स्वराज प्रतिष्ठान में गांधी विचार प्रबोधन शिविर का आयोजन था। शिविर के दौरान प्रतिभागियों ने प्रबोधकों के सामने इतिहास के कई ज्वलंत प्रश्न रखे।

हालांकि कोई भी सवाल जब गांधी और गांधी के किरदार के सामने खड़ा होता है, तब सबसे पहले सवाल पूछने वाले को सवाल और सवाल की तार्किकता के सामने खुद खड़े होना होता है। प्रस्तुत है एक शिविरार्थी द्वारा पूछा गया आज के दौर का एक चर्चित प्रश्न और उसका उत्तर। –सं.

प्रश्न : देश के विभाजन के लिए गांधीजी को जिम्मेदार ठहराया जाता है। ऐसा आरोप लगाने वालों के लिए गांधीजी की वास्तविक भूमिका कैसे स्पष्ट करेंगे?

-प्रकाश आढाव, पीपल्स कॉलेज, नांदेड

उत्तर : मशहूर शायर इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गीत लिखा है। आज भी हम बड़े स्वाभिमान से यह गीत गाते हैं। इन्हीं इकबाल साहब ने सन् 1930 में इलाहाबाद में हुए मुस्लिम लीग के सम्मेलन में कहा था—'मैं चाहता हूं कि पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत, सिंध एवं बलूचिस्तान सभी एक हो जाएं एवं एक राज्य बनें। मुझे लगता है कि जहां तक पश्चिमोत्तर भारत का संबंध है, वहां एक पश्चिमोत्तर मुस्लिम राज्य बने, चाहे वह ब्रिटिश साम्राज्य के अंदर हो या बाहर, यही मुसलमानों का आखिरी भाग्य है।' 1937 में अहमदाबाद में हिन्दू महासभा के अधिवेशन में अध्यक्ष पद से बोलते हुए सावरकर ने कहा—''आज हिन्दुस्तान, एक प्राण, एकात्म राष्ट्र हो गया है, यह मानने की भूल करने से अपना काम नहीं चलेगा। उल्टे इस देश में मुख्यतः हिन्दू एवं मुसलमान दोनों राष्ट्र हैं। इसे स्वीकार करके चलना चाहिए।''

(इंडियन एनुअल रजिस्टर 1943 भाग-2, पृ. 10)

मुस्लिम लीग अधिवेशन में जनाब इकबाल और मुहम्मद अली जिन्ना ने देश विभाजन के बीज बोए थे। इसी प्रकार सावरकर ने भी यह सत्य स्वीकार किया था। देश विभाजन के लिए मुस्लिम लीग जितनी जिम्मेवार है, उतने ही जिम्मेवार कट्टर हिन्दुत्ववादी प्रवत्ति के नेता भी थे, इस सत्य से हम इन्कार नहीं कर सकते। गांधीजी के साथ खान अब्दुल गफ्फारखान, मौलाना अबुल कलाम आजाद, वीरजी अहमद किदवई, भोला आजमी, डॉ. जाकिर हुसेन, प्रो. अब्दुल बारी आदि सभी राष्ट्रवादी मुसलमान विभाजन के विरोधी थे। किन्तु तीसरी ओर 'फूट डालो और राज करो' की अंग्रेजी विभाजनवादी नीति थी।

सन 1920 में गांधीजी के भारत आगमन के बाद बार-बार उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता की भावना को बढ़ावा देने का प्रयास किया। लॉर्ड बॉवेल ने मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने के लिए मुहम्मद अली जिन्ना को तथा हिन्दुओं की ओर से गांधीजी को बुलाया था। अंग्रेजों की चालबाजी को पहचानते हुए गांधीजी ने कहा कि मुस्लिम लीग की ओर से मुहम्मद अली जिन्ना और कांग्रेस की ओर से मौलाना अबुल कलाम आजाद प्रतिनिधित्व करेंगे। लॉर्ड वॉवेल के दिमाग में आया कि दोनों ओर मुसलमान हैं, इसलिए यह कूटनीति फेल हुई। गांधीजी ने तो कहा था कि पाकिस्तान की स्थापना करने के लिए मेरी लाश पर से गुजरना होगा।

गांधीजी और गफ्फारखान ने अंत तक विभाजन का विरोध किया। सरदार पटेल और नेहरू कहते थे कि हर तरफ हिंसाचार फैल रहा है, इसे टालने के लिए विभाजन को मान्य करना चाहिए। गांधीजी ने जवाब दिया—'मेरी श्रद्धा के प्रति मैं गर्व नहीं करता, मेरी अहिंसा शूरों की है, कमजोरों की नहीं, मैंने अहिंसा का व्रत लिया है। युद्ध और हिन्दू-मुस्लिम दंगे के मैं पूर्ण खिलाफ हूं। परंतु जब कुछ कसौटी के निर्णय लेने होते हैं तब मुझे लहूलुहान होने का डर नहीं लगता। हिंसा रोकने के लिए वक्त आने पर शस्त्र का भी उपयोग करना पड़े तो मुझे बिलकुल डर नहीं लगेगा। अंग्रेजों ने मुहम्मद अली जिन्ना को प्रधानमंत्री बनाया तो भी हमें मंजूर है लेकिन यह विभाजन नहीं चाहिए। आखिरकार जिन्ना भारतीय मुसलमानों को गुमराह करने में सफल हुए। खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे राष्ट्रवादी मुसलमान ने पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में विभाजन का विरोध किया परंतु जिन्ना और उनके कट्टर सहयोगी भड़क उठे। दूसरी ओर अंग्रेजों की विभाजन की नीति थी, जिसके कारण भारत भर में हिंसा और तनाव का प्रसार हुआ था।

लॉर्ड वॉवेल के आदेश के अनुसार पाकिस्तान के विभाजन की मांग के लिए मतदान करवाया गया। मतदान का अधिकार सिर्फ कुछ सुशिक्षित, आयकर देने वाले, गिने चुने लोगों को ही था। 90% मतदान पाकिस्तान की मांग के समर्थन में हुआ। अंग्रेज सरकार मतदान के निर्णय के पक्ष में थी इसलिए उन्होंने इस फैसले पर अमल किया। माउंटबेटन ने इशारा दिया था कि निर्धारित वक्त में हिन्दू-मुसलमान समझौता नहीं हुआ तो, अंग्रेज जिस स्थिति में भारत है, उसी स्थित में उसे छोड़ जायेंगे, जिसका परिणाम यह होता कि देश में छोटे-बड़े राज्यों को स्वाधीनता मिल जाती। इस कारण दंगे, हिन्दू-मुस्लिमों में ही नहीं, रियासतों के बीच भी छिड़ जाते। इस परिस्थिति में सरदार पटेल एवं पं. नेहरू के सामने विभाजन के सिवा दूसरा विकल्प नहीं था। फिर भी गांधीजी अंत तक बंटवारे के खिलाफ थे लेकिन एक व्यक्ति की मांग को कौन स्वीकारता है। वरिष्ठ नेता एवं भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार जयप्रकाशजी से कहा था कि, विभाजन के मुद्दे पर गांधीजी को हम अच्छी तरह समझ नहीं पाये। इसका पता हमें 1960 के बाद लगा।

(सर्व सेवा संघ प्रकाशन से शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक का अंश) ❑

प्रसंगवश

जिन्हें नाज है हिन्द पर...!

❑ प्रेम प्रकाश

यूनान ओ मिश्र, रोमां सब मिट गए जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी।

मुझे लगता है कि इन दो पंक्तियों ने एक राष्ट्र के रूप मे हमारा बहुत नुकसान किया है। ये पंक्तियाँ पिछले कई दशकों से भारतीय मन को खोखला और निठल्ला बनाए हुए हैं। हम मान बैठे हैं और अच्छे से जान लेने की खुशफहमी पाल बैठे हैं कि हम तो दुनिया मे सबसे श्रेष्ठ राष्ट्र हैं और हमे तो विश्वगुरु होने का दर्जा हासिल है। अगर कोई पूछ दे कि क्यों हासिल है...? तो ये नहीं मालूम। ये तो बताया भी नहीं इकबाल ने। अरे हां, राम यहीं जनमे, कृष्ण यहीं जनमे, गौतम, गांधी, टैगोर, विवेकानंद सब तो यहीं जनमे, इसलिए हैं हम विश्वगुरु और इसलिए हैं हम श्रेष्ठ राष्ट्र। श्रेष्ठता का यह एक निकम्मा बोध है, विश्वगुरुता का यह एक निरर्थक दर्प है, जो हमारी राष्ट्रीय चेतना को कहीं न कहीं अकर्मण्य बनाता है, उसे कुन्द करता है....! वरना यूनान ओ मिश्र रोम की सभ्यता कौन सी आज की है, और कौन सी अभी खत्म हो जाने वाली है...? दजला, फरात की सभ्यताओं का आधार इतना कमजोर कहाँ है कि वे हमे अपनी कीमत पर विश्वगुरु मान लें? हमारे यहाँ नदियां हैं, पहाड़ हैं, ऋतुएँ हैं, जंगल हैं, समुंदर है...तो कौन सा प्राकृतिक वैभव उनके पास नही है, कभी सोचा है आपने? हमारे दादा देशी घी खाते थे, इसलिए हमारी उँगलियाँ भी महकेंगी ही, ये कहके विश्वगुरु की स्वघोषित कुर्सी से उतरना ही नही चाहते हम। कोई अगर ये पूछ ले कि अपनी सभ्यता को विश्वगुरु की पदवी पर बनाए रखने के लिए आपने क्या तीर मारे, तो हम झट से इकबाल को याद कर लेते हैं—यूनान ओ मिश्र, रोमां सब मिट गए जहां से.....! इसलिए हैं हम विश्वगुरु। अरे, ये कविताई है, यथार्थ से इसका कोई रिश्ता नही है। कविता के कल्पित और यथार्थ के असली चित्र मे अंतर होता है। यूनान ओ मिश्र की सभ्यता, उसकी प्राचीनता, उसकी कलाएं, उसका संगीत, उसकी संस्कृति, उसका इतिहास, उसका भूगोल, उसकी महिमा आपसे बढ़कर न निकले तो कमतर भी नही निकलेगी। खंगाल कर देखने और अध्ययन करने की जरूरत है।

हमारे गाँव का प्राथमिक विद्यालय सरकारी धन, सामाजिक मेधा तथा व्यक्ति की संभावना की खुलेआम लूट का हमारा सबसे नजदीकी केंद्र आज़ादी मिलने के दिन से ही बना हुआ है। एक सचेत नागरिक के रूप में अपनी नागरिक शिक्षण की इस नर्सरी मे गुणात्मक सुधार के लिए हमने कोई यत्न किया क्या कभी...? हमारा गाँव हमारे राष्ट्र की सबसे सक्षम प्रतीक इकाई है। इस तरह भी कह सकते हैं कि हमारा गाँव ही हमारे नजदीक हमारा सबसे पहला राष्ट्र है। इस राष्ट्र की स्वच्छता, इसके विकास, इसकी प्रतिभाओं, इसके सृजन और इसकी मर्यादा के लिए हमने एक झाड़ू, एक कलम या एक आवाज़ उठाई क्या कभी...? इससे भी थोड़ा नीचे आयें तो हमारा घर दिखता है। हमारा घर हमारे देश मे बसा हमारा सबसे छोटा राष्ट्र है। हमने उसके प्रति अपनी भक्ति, अपना प्रेम, उसमे रहने वाले लोगों के प्रति सदाशयता, आदर, सम्मान, प्रेम और त्याग निवेश किया क्या कभी...? अपने माँ बाप, अपने परिवारी जन, अपने छोटे-बड़े के प्रति अटूट नेह और निःस्वार्थ त्याग की भावना की अलख जगाई क्या कभी...? दो, तीन, चार, छः परिवारों के मिले जुले हमारे कुटुंब और हमारे संयुक्त परिवार राष्ट्र की उदात्त भावना के सर्वाधिक परिष्कृत स्वरूप रहे हैं। संयुक्त परिवार की उस प्राचीन अवधारणा को ऑक्सीज़न देने के लिए हमने कोई अभियान, कोई नारा, कोई उद्वेग उठाया क्या कभी...? हमारे वीर जवान हमारे स्वार्थ की खिंची राजनैतिक सीमाओं पर खून बहाते हैं और हम उनके सम्मान मे जय जवान का नारा लगाते हैं। वहीं हमारे गाँव गिरांव मे हमारे मजदूर, हमारे अछूत, हमारे तिरस्कृत और हमारे बहिष्कृत लोग हमारी सामूहिक सुरक्षा और सेवा मे सदियों से होम हो रहे हैं। सीवरों में उतरते मजदूर जान लुटा रहे हैं। हमने उनके जयकारे के स्वांग धरे क्या कभी...? हमारे घरों मे एक माँ होती है, जो ये सबकुछ हम कर सकें, इसके लिए लाख-लाख दुखों से गुजरकर हमे धरती पर लाती है। उसकी, उसके सम्मान की, उसके ममत्व की अपने हिस्से की मातृ प्रतिष्ठा कर चुके क्या हम...? हमारे पड़ोस में एक परिवार रहता है। अपने पड़ोसी के प्रति प्यार और समावेशी भ्रातृभावना का परिचय देकर क्या अपनी योग्यता, अपना पड़ोसी धर्म साबित कर चुके हम....?

मेरे इन सारे सवालों के पीछे सिर्फ एक ही सवाल है और वो ये है कि जब हम राष्ट्र कहते हैं तो इस शब्द को समझते किन अर्थों में हैं? अपने माँ-बाप, भाई-पटीदार, गाँव-गिरांव, खेत-खलिहान, गाय-गोरू, स्कूल-मैदान, ऊसर-चकरोड, इन सबको बेहतर जीवन और बेहतर संभावनाओं का आसमान देकर अगर हम खाली हो चुके हों तो चलिये योग्यता साबित हुई, फिर राष्ट्रीय सीमाओं मे घिरे इस राजनैतिक राष्ट्र का भी आराधन कर लें थोड़ा। लेकिन अगर वो नही हो सका है अबतक, और कहीं भी, कुछ भी छूटा हुआ है, तो समझिए कि राष्ट्रभक्ति के लिए आवश्यक अर्हताएँ पूरी नही करते हम। ये बिलकुल वैसे ही है जैसे हम सेवादार तो हुए नही, प्रधान सेवक होने का मुगालता पाल लिया। ये बिलकुल वैसी ही बात होगी कि अपना छोटा सा घर तो हमसे संभाला नही गया और हम राष्ट्र संभालने चल पड़े। ये बिलकुल वैसा ही कुछ

है कि बूढ़े माँ बाप की सेवा तो हमसे हुई नहीं और राष्ट्रभक्ति के मद मे डूब गए। ये एकदम से वही बात हुई कि बर्र काटे का मंत्र तो हमे आया नही और सांप के बिल मे हाथ डाल बैठे। ये सच मे ऐसा ही है, जैसे हमारा बच्चा हमारी गोद मे ही है और हमने शहर भर मे डौंडी पिटवा दी। यह बिलकुल उस मर्दवादी, ब्राह्मणवादी, सामंतवादी और शोषणवादी व्यवस्था की तरह का एक ज्वार ही तो है कि जिसमे मिर्गी के शिकार मरीज को हम जूता सुंघाने लगते हैं। भुखमरी के शिकार बच्चे के मुंह पर लाली ले आने के लिए हम ओझा से झाडफूँक का मंत्र पढ़वाते हैं। एक कमजोर, निरीह और मजबूर स्त्री के साथ समूह मे जुटकर बलात्कार करते हैं।

हमारे ये दुर्गुण राष्ट्रवाद की इस सच्ची और खरी अवधारणा का दुर्वह भार ढोने की हमारी संभावित शक्ति को हमसे छीन लेते हैं। और उसके बाद चूंकि हम प्रथम और बुनियादी परीक्षा मे असफल रहे, तो अपनी इस सामाजिक कमजोरी को छुपाने के लिए उस बड़े राष्ट्रवाद की टोपी पहन के राष्ट्रवादी होने का दम्भ भरते हैं कि जिससे देखने वाला हमे राष्ट्र और राष्ट्रीयता का नायक समझे, कि जिसकी आड़ मे हमारी बुनियादी असफलताएं ढँक जायं। इस तरह के नकली राष्ट्रवादी हो जाने के बाद हमे पता भी नही चलता कि कब हम गलत सोचने लगते हैं, गलत करने लगते हैं और गलत चलने लगते हैं। इस प्रकार गलत सोचते, गलत बोलते और गलत करते हुए हम किसी टिकट खिड़की पर लगी हुई लंबी लाइन पर हिकारत भरी नज़र डालते हुए, लोकतन्त्र की इस मुद्रा पर खिलखिलाते हैं। फिर लाइन तोड़कर खिड़की के पास जाकर खड़े हो जाते हैं और कतार मे सबसे आगे खड़े व्यक्ति को बेवकूफ मानते हुए और उससे अपने टिकट के लिए गुपचुप साजिश करते हैं। ये नकली राष्ट्रवादिता हमे यहाँ ले जाकर छोडती है। ❑

हमारे नये प्रकाशन

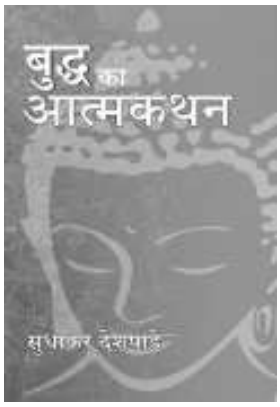

पृष्ठ : 96, मूल्य : 50/-

''तथाकथित ईश्वर का दरबार भरा हुआ था (अब यह मत पूछिए कि यह 'ईश्वर' क्या होता है। बस एक रोचक कहानी समझकर इस कहानी का आस्वाद लीजिए।) सारे विश्व में स्वैर संचार करने वाले देवर्षि नारद वहाँ पर उपस्थित हुए। ईश्वर ने नारदजी से पृच्छा की, ''देवर्षि, आप तो सारे विश्व में भ्रमण करते हैं। तो हमें तनिक बताइए तो कि पृथ्वी-लोक में इस समय क्या स्थिति है। नारदजी ने मुँह लटका कर कहा, ''क्या बताऊँ, प्रभु? बड़ी ही गंभीर स्थिति है। आये दिन, एक से बढ़कर एक महात्मा पृथ्वी-लोक में उत्पन्न हो रहे हैं। और उन्हें ईश्वर-स्वरूप मानकर लोग उन्हीं की पूजा-आराधना में लगे हुए हैं। इन महात्माओं के अनिर्बंध उत्पाद को यदि आप तुरंत रोकेंगे नहीं, तो कुछ ही समय में ये पृथ्वी-लोक के महात्मा आपका स्थान लेकर 'ईश्वर' बन बैठेंगे। और आपको—'वास्तविक ईश्वर' को—कोई पूछेगा तक नहीं।'' ईश्वर ने हँसकर नारदजी से कहा, ''चिंता न करिए, देवर्षि! मैंने जब इन महात्माओं का उत्पाद किया, तब, साथ ही साथ उनके अनुयायियों का भी तो उत्पाद किया है! ये अनुयायी ही उन महात्माओं के सर्वनाश के लिए पर्याप्त हैं!''

इस पुस्तक का प्रारंभ अत्यंत भव्य है और समापन भी दिव्य। नवयुग धर्मचक्र प्रवर्तक डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को यह पुस्तक समर्पित है, साथ ही अंत में गांधी की सशक्त अवधारणा के प्रति कृतज्ञता भी है। बीच में कई प्रसंग हैं जो हमारे मन-मस्तिष्क को आंदोलित करते हैं। शेष तो, आप स्वयं इसे पढ़कर स्फुरण का अनुभव करेंगे।

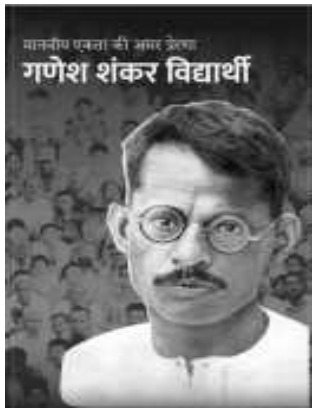

पृष्ठ : 40, मूल्य : 30/-

विद्यार्थी जी जो कांग्रेस के करांची अधिवेशन में आने की तैयारी में थे, कानपुर में अचानक दंगों के कारण उन्होंने वहाँ जाना स्थगित कर दिया। 25 मार्च को दिन के डेढ़ बजे जब दंगों की आग पूरे शहर में फैल गयी और शाम चार-पाँच बजे जब स्थिति भयानक मार-काट में बदल गयी, सुरक्षा बलों की कमी और सुस्ती से विद्यार्थी जी किसी की परवाह किये बिना घर से बाहर आ गये और दंगाई क्षेत्रों में अकेले ही घुस पड़े। एक प्रत्यक्षदर्शी माधो प्रसाद के आँखों देखे बयान के अनुसार मेस्टन रोड की मस्जिद के पास, नई सड़क पर आकर मण्डी व चौक, दोनों ओर से आ रही दंगाई भीड़ में विद्यार्थी जी घिर गये। भीड़ ने उन्हें चौबे गोला की गली में घसीटना शुरू किया। विद्यार्थी जी ने अपने बचाव में कहा कि वह भागेंगे नहीं। उन्मादी भीड़ में से एक ने उनकी पीठ में छुरा भोंककर व दूसरे ने कुल्हाड़ी से वार करके उन्हें जमीन पर गिरा दिया। दंगा पीड़ितों को अब तक बचाने वाले एकमात्र विद्यार्थी जी इस हृदय विदारक घटना में अपना जीवन-दान दे चुके थे।

1 अप्रैल, 1931 को 'प्रताप' के संयुक्त सम्पादक बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को तार से भेजे अपने पत्र में गांधी ने लिखा था, ''...यद्यपि कलेजा फट रहा है तो भी गणेश शंकर की इतनी शानदार मृत्यु के लिए शोक-सन्देश नहीं दूँगा। चाहे आज ऐसा न हो, परन्तु उनका पवित्र खून किसी दिन अवश्य हिन्दुओं और मुसलमानों को एक करेगा। इसलिए उनका परिवार शोक-सन्देश का नहीं, बधाई का पात्र है। इसकी मिसाल अनुकरणीय सिद्ध हो।''

ये दोनों पुस्तकें सर्व सेवा संघ प्रकाशन ने प्रकाशित की है। ये हमारे सभी रेलवे बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। आप अपना क्रयादेश सीधे सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-221001 के पते पर भी भेज सकते हैं।

–प्रकाशक

संकट में अन्नदाता

आज देश के सवा अरब से अधिक लोगों का अन्नदाता सबसे अधिक दुखी एवं परेशान है तथा आत्महत्या करने को विवश है। कृषि उत्पादन की लागत तेजी से बढ़ रही है। उत्पादन लागत कम करने की दिशा में सरकार की कोई ठोस नीति नही है। बढते उत्पादन लागत की तुलना मे कृषि उत्पादों के मूल्य नही बढने से किसान घाटे तथा दुख की खेती करने को मजबूर है। जो भी एमएसपी सरकार तय करती है उस पर भी किसानों के उत्पादों की खरीद नही होती, किसान बिचौलियो के मारफत औने-पौने भाव मे अपना उत्पाद बेचने को विवश होता है। सरकार के स्वामीनाथन आयोग की अनुशंसा के आलोक मे ड्योढा मूल्य देने के ऐलान से मुकरने से किसानों को लाभकारी मूल्य पाने की उम्मीद पर पानी फिर गया। सरकार कम्प्रीहेनसिव कास्ट के वजाय एफ एल कास्ट पर कृषि उत्पाद का मूल्य तय कर ड्योढा मूल्य देने का झूठा प्रचार करने लगी जबकि उस मूल्य पर भी कुछ राज्यों को छोड़कर कृषि उत्पाद की खरीद नही हुई।

गन्ना किसानों के साथ भी सरकार ने वायदा-खिलाफी कर महज 20 रुपये प्रति कुन्तल की मूल्य वृद्धि की जबकि उससे अधिक मूल्य वृद्धि डीजल, उर्वरक तथा कृषि उपकरणों पर होने से गन्ना की उत्पादन लागत बढ़ी। आज घोषित मूल्य भी नही मिलने से किसान बेहाल है। अभी भी किसानों का 22 हजार करोड़ रुपये चीनी मिलों पर बकाया है।

किसानों के इन्ही सवालों पर मध्यप्रदेश से शुरू हुए आन्दोलन ने संसद पर प्रदर्शन करते हुए किसान संसद से कर्ज मुक्ति तथा कृषि उत्पाद के लाभकारी मूल्य विधेयक पास कराकर संसद में बिल पेश कर सरकार से किसानों के दुखों पर विशेष वहस कराने तथा बिल पास कराने की मांग की जिसे सरकार ने नकार दिया। इस बीच भाजपा तथा कांग्रेस दोनो ने कर्ज माफी का एलान कर चुनावी लाभ जरूर लिया।

अब देश आम चुनाव में है परन्तु किसानों की कर्ज मुक्ति तथा स्वामीनाथन आयोग की अनुशंसा के आलोक मे ड्योढ़ा मूल्य का सवाल, सिंचाई, बाजार तथा फसल बीमा के भुगतान सहित अन्य सवाल आज भी वही के वही खड़े हैं। दोनों गठबंधन चुनावी लाभ के लिए किसानों के मुद्दों को भटकाकर अलग-अलग मुद्दों को लेकर चुनावी लाभ लेने में लगे हुए है।

किसान अपने सवालों पर देश के विभिन्न भागों में आन्दोलित हैं। उत्तर बिहार के सीतामढ़ी में भी सर्वोदय तथा किसान मोर्चा के साथियों ने हाल फिलहाल होली नही मनाकर अपना विरोध दर्ज कराया है। बापू की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केन्द्र में किसान हैं, उसके दुखों को लेकर सर्वोदय के साथियों को गोलबंद होकर संघर्ष बढ़ाने की जरूरत है।

–डॉ. आनन्द किशोर,
अध्यक्ष, सीतामढ़ी जिला सर्वोदय मंडल

लोक-विमर्श

जागृत नागरिकों का संगठन हो

1992 में 73वें और 74वें संविधान संशोधन के अनुसार अधिकारों का विकेन्द्रीकरण तो उम्मीदों के मुताबिक ही हुआ। लेकिन शहरी स्तर पर बहुत काम होना बाकी है। शहरी विकास में लोक सहभागिता बढ़ाने के लिए मॉडल नागराज बिल का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है। समाज के जागृत नागरिकों द्वारा सहभागी होकर सरकार की निर्णय प्रक्रिया में एरिया सभाओं के माध्यम से सत्ता का विकेंद्रीकरण करने और लोक-सहभाग बढ़ाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। सद्भावना संघ द्वारा मुंबई में 22 एरिया सभा का निर्माण किया गया है तथा दो आदर्श एरिया सभा बनाने की प्रक्रिया शुरू है। हमारा विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से समाज में व्याप्त निष्क्रियता और उदासीनता दूर की जा सकती है ताकि समाज में सभी जीवनमूल्यों के साथ खुशहाल जीवन जी सके।

–किशन गोरडिया
मुख्य संयोजक, सद्भावना संघ

स्थायी उपाय जनता को खुद ढूंढ़ने होंगे

पृथ्वी पर समूचा जीव-जगत ही बेचैन है। अलग-अलग देशों के नाम पर बँटा मनुष्य-जीवन हर तरह की समस्याओं से त्रस्त है। इन समस्याओं का बडा हिस्सा स्वयं मनुष्य निर्मित है। भारतीय समाज दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में अधिक जटिल व समस्या ग्रस्त है क्योंकि यहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक बुनावट में जटिलता बहुस्तरीय है। भारत के बहुलतावादी समाज के भीतर की दो प्रमुख समस्याओं-जातिवाद और साम्प्रदायिकता ने भारतीय मनोविज्ञान को ठीक उसी तरह उलझा रखा है, जिस तरह बीती शताब्दी में यूरोपीय समाज को काले-गोरे रंग के नस्लभेद ने। यह वहाँ आज भी कम जरूर है पर खत्म नहीं हुआ है। भारत में जातिवाद ने एक ओर समाज को श्रेणीबद्धता में कट्टर बनाया, ऊँच-नीच की दुर्भावना पैदा की,तो दूसरी ओर साम्प्रदायिकता ने विभिन्न धर्मों के बीच भिन्न धार्मिक आस्थाओं के चलते आपसी घृणा और द्वेष को लगातार बढ़ाया। आज ये दोनों बुराइयाँ देश की सामाजिक-सांस्कृतिक एकता के लिए न केवल कठिन चुनौती है, बल्कि सामूहिक विकास की सबसे बड़ी बाधाओं में एक है।

आमतौर पर भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता का मतलब केवल हिंदू-मुस्लिम समुदायों के बीच की घृणा, हिंसा और दंगों से लिया जाता है। पर यह समस्या का आधा सच ही है। कुछ साल पहले कंधमाल, उड़ीसा में ईसाई समुदाय पर हुए हिंसक हमलों व उससे पहले 1984 के सिख विरोधी दंगों को याद करें तो साम्प्रदायिकता की पूरी भयावहता की तस्वीर हमारे सामने साफ होती है। सबसे चिन्ताजनक यह है कि देश के राजनीतिक दल सत्ता और सम्पत्ति के लिए इन दोनों बुराइयों के खिलाफ़ संघर्ष करने और रास्ता निकालने के बजाय हथियार बनाकर जनता को भटकाने में लगे हुए हैं। यह स्थिति राष्ट्रीय एकता , लोकतंत्र,नागरिक अधिकारों व देश के संविधान की मूल प्रेरणा के बिलकुल उल्टी, जन-विरोधी और खतरनाक है। जनता को अब यह साफ समझना चाहिए।

–दिनेश प्रियमन

आज की चुनौतियां

विगत दिनों 12 एवं 13 मार्च को रायपुर (छत्तीसगढ़) में दो दिवसीय सर्वोदय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के दूसरे दिन प्रथम सत्र में बा-बापू की 150वीं जन्मशती में आज की चुनौतियां व समाधान विषय पर खुली चर्चा हुई। दर्शकदीर्घा से अनेक महानुभावों को सुनने-समझने का अवसर प्राप्त किया। देश-दुनिया की काफी बातें हुई तथापि जो बातें आज के संदर्भ में सर्वोदय जगत में चुनौती प्रस्तुत कर रही हैं, वे इस प्रकार हैं :

1. सर्वोदय एक सशक्त विचारधारा व उत्कृष्टतम् दर्शन है। 2. सत्ता नित्य सुरक्षा की भांति विकराल होती जा रही है जबकि नैतिकता व सेवा सर्वोदय जगत की धरोहर है। 3. जिस स्वराज्य की खातिर बापू ने अपने जीवन की आहुति दी, जेपी ने संपूर्ण क्रांति की नींव रखी, आज उस स्वराज्य में 'लोक' की कोई हैसियत नहीं, जबकि तंत्र विषधर होता जा रहा है। 4. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना वाला यह देश तेरा-मेरा व खुदगर्जी में फंसा है। 5. हम मानव रूप में पैदा हुए; जीव जगत से इतर स्वयं को श्रेष्ठ कहते नहीं थकते, किन्तु वास्तव में हमारा मानव बनना ही अभी बाकी है। 6. भारत की जनसंख्या अब एक अरब की संख्या से पार हो चुकी है, क्या हम 1 करोड़ भी लोक-सेवक नहीं बन सकते....?

मुझे लगता है कि बड़ी-बड़ी बातों से अच्छा इन तथ्यों पर ध्यान दिया जाय तो बा-बापू की 150वीं जयंती मनाने की दिशा में यह वर्ष सार्थक साबित हो सकेगा। **–विनोद भाई**, देवघर-झारखंड

गतिविधियां एवं समाचार

उपवास तथा सत्याग्रह

देश में बढ़ती हिंसा, सांप्रदायिक उन्माद, लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षण, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रहार तथा सज्जन शक्ति के दमन के विरोध में गांधी शहादत दिवस पर जिला सर्वोदय मंडल सीतामढ़ी के तत्वावधान में एक दिवसीय उपवास तथा सत्याग्रह संपन्न हुआ। शहीद स्मारक स्थल पर उपस्थित सर्वोदय कार्यकर्ताओं, साहित्यकारों, किसानों, युवकों तथा बुद्धिजीवियों ने गांधीजी की तस्वीर पर माल्यार्पण करके उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ. आनंद किशोर ने की। उन्होंने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा संघर्ष उन मूल्यों के लिए है, जिनके लिए बापू को अपनी जान गंवानी पड़ी। गांधीजी भी प्रासंगिकता आज देश में ही नहीं, दुनिया में की बढ़ी है। साहित्यकार राजेन्द्र सिन्हा ने कहा कि जब गांधी विचार की ग्राह्यता वैश्विक स्तर पर बढ़ती जा रही है, तब देश में गांधी को निरर्थक बहसों में घेरने की साजिशें हो रही हैं। आज आतंकवाद से पीड़ित दुनिया अहिंसा के सिद्धांतों पर चिन्तन कर रही है। लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियां देश के सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे को कमजोर करने में लगी हुई हैं।

कार्यक्रम के अंत में राजेन्द्र सिन्हा ने सत्याग्रहियों को शरबत पिलाकर उपवास समाप्त करवाया। इस मौके पर साहित्यकार विमल कुमार परिमल, मंत्री हरिनारायण सिंह, रामतपन सिंह, जीवनाथ शाफी, सीताराम झा, लाल बाबू मिश्र, आफताब अंजुम, प्रो मुरारी शरण, जयप्रकाश राय, नवल किशोर राऊत, विजय कुमार शुक्ला, कौशल किशोर यादव, रामजी मंडल, अशोक निराला, कवि सुरेशलाल कर्ण, विश्वनाथ बुन्देला, ताराकांत झा, डॉ. रवीन्द्र सिंह, सत्यनारायण सिंह, मुकेश कुमार मिश्र, शिवशंकर शर्मा, इरशाद अहमद, मो ग़यासुद्दीन, रमाशंकर झा, प्रभाकर प्रसाद, अशोक कुमार, जलंधर यदुबंशी, शशिधर शर्मा, नन्दकिशोर मंडल तथा डॉ. कमलेश्वर विनोद आदि उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन दिनेशचन्द्र द्विवेदी ने किया। **–आनंद किशोर**

कुसुमलता जैन पुरस्कृत

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2019 को जयपुर स्थित राज्य कृषि प्रबन्ध संस्थान, दुर्गापुरा के सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्य अतिथि महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती ममता भूपेश ने सार्वजनिक कार्यकर्ता, सर्वोदय मित्र तथा ग्राम भारती समिति की सचिव कुसुमलता जैन को राज्यस्तरीय महिला शक्ति पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप 51,000/-रूपये एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर राज्यभर से आई हुई महिलाओं के बीच श्रीमती भूपेश ने आह्वान किया कि बाल विवाह रोकने का कार्य हो या सामूहिक विवाह प्रोत्साहन का या फिर महिला हिंसा के विरूद्ध कदम उठाने हो, इसमें सबको साथ चलना होगा।

कुसुम जैन ने लगभग 2 हजार कुष्ठ रोगियों को भिक्षावृत्ति से मुक्त कर स्वावलंबी बनाया। उन्होंने देह व्यवसाय में संलग्न पांच हजार जनजातीय महिलाओं में शिक्षण-चेतना जागरण के साथ-साथ उनको अनौपचारिक शिक्षा, पेयजल तथा चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी। उनके द्वारा रोपित एक लाख से अधिक पेड़ों के जंगल को *इन्दिरा प्रियदर्शनी वृक्षमित्र पुरस्कार* सहित अनेक राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। उन्होंने सात हजार महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित कर उन्हें दरी, कारपेट, कशीदाकारी आदि हस्तकलाओं में प्रशिक्षित किया तथा स्थाई रोजगार से जोड़कर स्वावलंबी बनाया। ग्रामीण महिलाओं को स्वावलंबी बनाकर विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कुसुम जैन को 2001 में जिनेवा स्थित *वर्ल्ड वूमेन्स सम्मिट* द्वारा ग्रामीण जीवन में *'महिला रचनात्मकता पुरस्कार'* प्रदान किया गया। ग्रामीण महिलाओं में उद्यमिता विकास के कार्यों के आधार पर 2007 में उनका *जानकी देवी बजाज पुरस्कार* के लिए मनोनयन किया गया। 1994 में लंदन स्थित क्रेनफील्ड विश्वविद्यालय से *'उद्यमिता विकास के द्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण'* पर डिप्लोमा करने वाली कुसुम जैन नैरोबी, इंग्लैंड, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, अमेरिका तथा चीन आदि कई देशों की यात्रा कर चुकी हैं।

एडीआर सर्वे रिपोर्ट

जनमत का सत्ताविरोधी रुझान

चुनावों और चुनावी प्रक्रिया पर शोध और अध्ययन करने वाली संस्था एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के ताजा सर्वेक्षण में सामने आया है कि देश के लोग मोदी सरकार के कामकाज से संतुष्ट नहीं हैं। रोजगार का अच्छा अवसर पूरे देश में लोगों की प्राथमिकता है।

देश में लोकसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद चुनावी प्रक्रिया शुरू हो गई हैं। लेकिन ऐन चुनाव से पहले आई एडीआर की रिपोर्ट बीजेपी और मोदी सरकार के लिए समस्या खड़ी कर सकती है।

एडीआर की रिपोर्ट में बताया गया है कि मतदाताओं की 10 प्राथमिकताओं के आधार पर मोदी सरकार के कामकाज का स्कोर औसत से भी कम आया है। इसके मुताबिक, 'रोजगार का अच्छा अवसर' भारतीय मतदाताओं की शीर्ष प्राथमिकता है। मतदाताओं की प्राथमिकता के दो अन्य मुद्दों 'बेहतर स्वास्थ्य सेवा' और 'पेयजल' के मामले में भी सरकार का प्रदर्शन औसत से कम रहा है।

सर्वे के मुताबिक, मतदाताओं की शीर्ष प्राथमिकता बेहतर रोजगार के अवसर को लेकर रही और इस क्षेत्र में सरकार का प्रदर्शन बदतर में से एक माना गया। सरकार को इसमें 5 के स्केल पर कुल 2.15 की रेटिंग मिली। रिपोर्ट में कहा गया है कि मतदाताओं की शीर्ष 10 प्राथमिकताओं को देखने से साफ है कि भारतीय मतदाता आतंकवाद एवं मजबूत सुरक्षा और सैन्य शक्ति जैसे शासन के मुद्दों की तुलना में रोजगार और स्वास्थ सेवा, पेयजल, बेहतर सड़कों जैसी मूलभूत सुविधाओं को अधिक महत्व देते हैं।

एडीआर ने यह सर्वेक्षण अक्टूबर 2018 से दिसंबर 2018 के बीच 534 लोकसभा क्षेत्रों में 2,73,487 मतदाताओं के बीच किया। एडीआर ने कहा कि यह गंभीर चिंता की बात है कि मतदाताओं की 31 प्राथमिकताओं में से किसी में भी सरकार का प्रदर्शन औसत या औसत से ऊपर नहीं रहा। सर्वेक्षण के नतीजे में कहा गया है कि 'इससे स्पष्ट संकेत मिल रहा है कि मतदाता सरकार के कामकाज से संतुष्ट नहीं हैं। सरकार को प्राथमिकताएं तय करनी होंगी और इन क्षेत्रों में अधिक निवेश करना होगा।'

कविताएं

ये जलियांवाला बाग है!

–विकास यशकीर्ति

कैसे मीठे गीत सुनाऊँ, कैसे सुंदर छंद बनाऊँ,
बेबस लोगों की मौतों का, दर्द भरा एक राग है.
... ये जलियांवाला बाग है.
अमृतसर की खुशहाली को कोलाहल ने घेरा है.
भारत माता की भूमि पर अंग्रेजों का डेरा है.
सत्य अहिंसा की धरती पे ये काली परछाई है.
मौन निहत्थे इंसानों पर क्यूं गोली चलवाई है.
शर्मसार सारा संसार ये मानवता पर दाग है.
... ये जलियांवाला बाग है.
मौत के सौदागर, ये देखो! तंग गली से आये है.
हाथ में बंदूकें हैं जिनके, लगते मौत के साये है.
बारूद की गर्जन से ऊपर आसमान थर्राया है.
नरसंहार की निर्ममता से सबका दिल भर आया है.
कहीं लाल को लील गया, तो कहीं निढाल सुहाग है.
... ये जलियांवाला बाग है.
अफरा तफरी उस ज़ालिम ने चारों तरफ मचाई है.
धर्म वेद सब शून्य हो गए, काँप रही सच्चाई है.
रिश्तों के गहरे बंधन भी एक वार में टूट गए.
अपनी जान बचाने को अंधे कुँए में कूद गए.
बाहर जनरल डायर है, अन्दर ज़हरीले नाग है.
... ये जलियांवाला बाग है.
भरी भीड़ पर दुश्मन ने इतनी गोली चलवाई हैं.
नन्हे-मुन्नों के हिस्से भी दस दस गोली आई हैं.
नहीं सुन रही चीत्कारें भी, चारो तरफ अँधेरा है.
ये कैसी सुबह है, जिसको अंधकार ने घेरा है.
उजड़ गयी है कोख किसी की,बुझा कहीं पे चिराग है.
... ये जलियांवाला बाग है.
भारत माँ लाशों पर बैठी खून के आंसू रोती है.
देश पे मर मिटने वालों की कैसी हालत होती है.
दुश्मन की करतूतों पर क्यूं बहा रही तू नीर है?
तेरी गोद में माँ जननी अभी भगत सिंह से वीर हैं.
जनरल डायर तू है कायर, दिल में दहकी आग है.
... ये जलियांवाला बाग है.

मुट्ठी में मिट्टी लहू सनी

–अमित जैन 'मौलिक'

इन इतर कयासों को छोड़ो, मैं खूंरेजी का किस्सा हूं,
हूं ख्वार मगर पाकीजा हूं, मैं जलियां वाला हिस्सा हूं।

नस-नस में लावा बहने की, ये रुधिर फुलंगों की बातें,
क्षत-विक्षत बिखरे रक्त सने, अपनों के अंगों की बातें।

फूलों के कुचले जाने की, गुंचों के मसले जाने की,
कुचलों को और कुचलने की, गिरतों को और गिराने की।

अपने हिस्से की सांसों की, अपनी निजता की बातों की,
बारूदों की जद में मचले, बेखौफ उठे अरमानों की।

अंतिम निर्णय का शंखनाद, मैं विद्रोहों का किस्सा हूं,
मैं मतवालों की मस्ती हूं, मैं जलियां वाला हिस्सा हूं।

गुस्ताख़ी मत करना कोई, चौकंद यहां पर रहना तुम,
खामोशी से खामोशी को, कुछ कह लेना कुछ सुनना तुम।

धीरे-धीरे हौले-हौले, जेहाद की आवाजें सुनना,
जिद में मचली आजादी की, उन्माद की आवाजें सुनना।

महसूस करो तो कर लेना, स्व-राज की खूनी तनातनी,
अरमान उठे तो भर लेना, मुट्ठी में मिट्टी लहू सनी।

कण-कण फिर बोल उठेगा मैं, किस आहूति का हिस्सा हूं,
हूं ख्वार मगर पाकीजा हूं, मैं जलियां वाला हिस्सा हूं।

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।